

सुबह

subhasaverenews@gmail.com
facebook.com/subhasaverenews
www.subhasavere.news
twitter.com/subhasaverenews

रणकपुर का रहस्यमय जिनालय



इस मंदिर का निर्माण धरणा शाह (सादड़ी मेवाड़ के साहूकार) ने महाराणा कुम्भा के शासनकाल (1433 से 68 ई.) में करवाया था। यह मंदिर पश्चिम भारत के शिल्पकारों और सूत्रधार परिवारों के लिए पिछले 500 सालों से प्रशिक्षण केंद्र भी रहा है। रणकपुर मंदिर अभी तक सुरक्षित है क्योंकि निर्माताओं के वंशज अभी तक इससे जुड़े हैं। वे अपने पूर्वजों की थाती को नष्ट नहीं करते बल्कि अनुरक्षित और सुरक्षित करते हैं। शिल्प को यथारूप रखने पर ध्यान देते हैं और इसके लिए मूल शिल्पकारों को जोड़े रखते हैं।

फोटो: पंकज शर्मा

सुप्रभात

शब्द रह गये हैं पीछे

थोड़ा थक गये हैं शायद चलते-चलते जबकि आगे-आगे गवॉत्रत चल रहे हैं वे बम-बारूद, तोप-टैंक और गुर्रसैल सैनिक दफ़ा हुईं फूलों की, सपनों की कहानियाँ व्यर्थ हुआ नदियों, झरनों का बहना रात, चाँदनी, अकेली लड़की भटकती हुई सुने में चमकती है थानेदार की मोटरगाड़ी तलाशा सूर्योदय, संत-वाणी, प्रेम और दुःख एक बेहद लंबी सुरंग से गुजरता हूँ मैं कुछ नहीं और, कुछ नहीं और, है नहीं? वहाँ सिर्फ कुछ मसखरे समझा रहे हैं गणित कम को अधिक में से घटा दो प्यारे मियाँ खारिज कर दो भाषा, विचार और संवाद निकाल बाहर करो तमाम पुस्तकालय दाना-पानी तमाम दबा दो जल्द से जल्द गोदाओं-तिजोरियों में, कृपा-नीतियों में संगीत-सभाओं में खोल दो कुट्टु-केंद्र सच ही कहा गया है, लेकिन शब्दों में ही व्याकरण के समीकरण में कीचड़ है जहाँ क्यों नहीं हर हाल कवि हाज़िर है वहाँ सफ़ाई-कामगार का दूसरा नाम है कवि जो अकारण ही खुद अपनी पीठ पर लाद लिए चलता है ज़मानेभर का बोझ सर्वथा अकेला ही होता है वह हर कहीं मगर बहुविध, बहुतेरे फिर मचाता है शोर अकेले-अकेले ही फ़ाड़ देना चाहता है दुनिया का बेहूदा-बदरंग वह मानचित्र जिसमें खूनी-लकीरों से खींची हैं सीमा? उड़ते पक्षी जानते नहीं हैं कि घर कहीं प्रार्थना? जानती है पता भूखे बच्चों का भौंकते-भौंकते थक गये हैं कुत्ते तमाम बोलते-बोलते हार गये हैं वाचाल सभी चलते-चलते उठर गये हैं चक्र चक्रवर्ती पहनकर हेलमेट आगे हैं भाषा-वैज्ञानिक शांति-वार्ताओं की उड़ते हुए ध्वजियाँ शब्द रह गये हैं पीछे।

- राजकुमार कुम्भज

इस चुनाव में

बदलाव को तैयार है बंगाल

● मुर्शिदाबाद में पीएम मोदी ने टीएमसी पर बोला जोरदार हमला
कहा- बंगाल की जनता टीएमसी का अहंकार करेगी चकनाचूर

कोलकाता (एजेंसी)। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने शनिवार को पश्चिम बंगाल के पूर्व वर्धमान जिले के कटवा और मुर्शिदाबाद के जंगीपुर में चुनावी रैलियों को संबोधित किया। पीएम ने पूर्व वर्धमान में कहा- बंगाल बदलाव के लिए तैयार है। मोदी की गारंटी टीएमसी की निर्मम सरकार के भय राज को हटाने के भरोसे में बदलने की है। मुर्शिदाबाद में मोदी ने कहा- आजादी के बाद से, बंगाल को चुनौती देने की हिम्मत करने वाले हर व्यक्ति का अहंकार चकनाचूर हो गया है। पहले अंग्रेजों का, फिर कांग्रेस का, और अंत में वामपंथियों का अहंकार भी चकनाचूर हो गया।



अब बंगाल की जनता टीएमसी के अहंकार को चकनाचूर कर देगी। पीएम मोदी ने कहा- आजादी के बाद से, बंगाल को चुनौती देने की हिम्मत करने वाले हर व्यक्ति का अहंकार चकनाचूर हो गया है। पहले अंग्रेजों का, फिर कांग्रेस का, और अंत में वामपंथियों का अहंकार चकनाचूर हो गया।

बंगाल में कमीशन-भ्रष्टाचार की व्यवस्था खत्म करेंगे

प्रधानमंत्री मोदी ने कहा कि बीजेपी सरकार बनने पर राज्य में 'कट मनी', कमीशन और भ्रष्टाचार की व्यवस्था खत्म कर दी जाएगी। राज्य में रोजगार के नए अवसर पैदा किए जाएंगे, जिससे युवाओं को फायदा मिलेगा। उन्होंने यह भी कहा कि बीजेपी के घोषणा पत्र के अनुसार, सरकार बनने के 45 दिनों के भीतर सरकारी कर्मचारियों को सातवें वेतन आयोग का लाभ दिया जाएगा। यह चुनाव बंगाल की पहचान बचाने का चुनाव है- प्रधानमंत्री मोदी बंगाल के जंगीपुर में आज की दूसरी जनसभा को संबोधित कर रहे हैं। उन्होंने कहा- बंगाल में टीएमसी मां, माटी और मानुष का नारा लगाकर सरकार में आई लेकिन अब राज्य में घुसपैठियों की सरकार बनाना चाहती है। बंगाल के लोगों ने टीएमसी को घुसपैठियों की सरकार बनने नहीं देना है। ये चुनाव सिर्फ सत्ता परिवर्तन का चुनाव नहीं है।

बंगाल के लाखों परिवारों को मुफ्त इलाज मिलेगा

पीएम मोदी ने कहा कि वर्धमान सहित पूरे बंगाल के लाखों परिवारों को मुफ्त इलाज मिलेगा। बंगाल की धरती से शरणार्थी परिवारों को भी गारंटी देने आया हूँ। हमारे मतुआ और नामशुद्र सभी परिवार यहां किसी टीएमसी की नेता की कृपा से नहीं हैं। आप यहां संविधान के संरक्षण में हैं। ताकि सभी शरणार्थियों को संविधान की गारंटी मिले। सरकार बनते ही इन सभी को सीएफ को नागरिकता देने का काम और तेज किया जाएगा। हर घुसपैठिए से कहुंगा कि वो अपना बोरिया बिस्तर बांध लें, जो यहां आए, नकली कागज बनाए, सरकारी योजनाओं का फायदा लिया। उन सभी का हिसाब होगा। दुनिया के विकसित देश भी घुसपैठियों को चुन-चुनकर बाहर निकाल रहे हैं। भारत तो विकसित होने के रास्ते में हैं। अगर किसी घुसपैठिए को फर्जी राशन कार्ड दिया जाए तो वह आपके हक का चावल लूटेगा। अगर कोई घुसपैठिया फर्जी अधार कार्ड बनाता है तो वह किसान के हक का पैसा भी लूट लेगा। इसलिए आपको सतर्क रहना है टीएमसी को मौका नहीं देना है।

वृंदावन हादसा में अब तक 11 श्रद्धालुओं की गई जान

● 4 लोग अब भी लापता, 250 गोताखोर रेस्क्यू में जुट ● यमुना से बेटे की लाश निकली तो बुजुर्ग पिता रो पड़ा

मथुरा (एजेंसी)। मथुरा के वृंदावन में नाव हादसे में 11 श्रद्धालुओं की मौत हो चुकी है। अब तक 22 लोगों को रेस्क्यू किया गया है। अभी 4 लोग लापता हैं। शनिवार को दूसरे दिन भी रेस्क्यू ऑपरेशन चल रहा है। आर्मी समेत 250 लोगों की टीम रेस्क्यू ऑपरेशन में लगी हुई है। 14 किमी के दायरे में लापता लोगों की तलाश की जा रही है। एक शव देवरहा बाबा घाट के पास से बरामद किया गया। बेटे की लाश देखकर बुजुर्ग पिता रो पड़े। परिवार वालों ने उन्हें ढाँढस बंधाया। बाकी लापता अब तक क्यों नहीं मिल पाए। इस सवाल पर रेस्क्यू में जुटे अफसर ने बताया कि यमुना का बहाव तेज है, इसलिए लोग बहकर दूर जा सकते हैं। नदी में गाद (कीचड़) और रेत में शव दबे हो सकते हैं।

मुख्यमंत्री आज लाड़ली बहनों के खातों में राशि करेंगे अंतरित

सीहोर में 184 करोड़ से अधिक के विकास एवं निर्माण कार्यों का करेंगे लोकार्पण एवं भूमि-पूजन

भोपाल (नप्र)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव 12 अप्रैल को सीहोर जिले के आग्र में आयोजित कार्यक्रम में प्रदेश की एक करोड़ 25 लाख से अधिक लाड़ली बहनों के खातों में 1836 करोड़ रुपये से अधिक की राशि अंतरित करेंगे। कार्यक्रम में मुख्यमंत्री डॉ. यादव 184 करोड़ 92 लाख रुपये की लागत के विकास एवं निर्माण कार्यों का लोकार्पण एवं भूमि-पूजन भी करेंगे। इन कार्यों में 115 करोड़ 32 लाख रुपये के कार्यों का लोकार्पण एवं 69 करोड़ 60 लाख रुपये के कार्यों का भूमि-पूजन शामिल है।

किसान देश की अर्थव्यवस्था की रीढ़, किसानों के विकास के लिए हम हैं प्रतिबद्ध : राजनाथ सिंह

● किसानों के श्रम से देश का खाद्यान्न निर्यात हुआ दोगुना : मोहन यादव ● किसानों के लिए पाठशाला की तरह है उन्नत कृषि महोत्सव : शिवराज

भोपाल (नप्र)। केन्द्रीय रक्षा मंत्री श्री राजनाथ सिंह ने कहा है कि देश की सीमा पर जवान और खेतों में किसान दोनों का समान महत्व है। दोनों ही अपनी मिट्टी के प्राण-प्राण से सेवा में तत्पर रहते हैं। किसान हमारे देश की अर्थव्यवस्था की रीढ़ है, हमारी ताकत हैं। इनके बिना हमारे भोजन की थाली अधूरी है। किसानों की मुस्कान ही हमारी पूंजी है। उन्होंने कहा कि खेती-किसानी बड़े जोखिम का काम है, फिर भी हमारे किसान पूरी मेहनत और लगन से देशवासियों का उदर-पोषण करते हैं। रक्षा मंत्री ने कहा कि वे स्वयं एक किसान पुत्र हैं। किसानों की वेदना और उनकी जरूरतों से वाकिफ हैं। किसानों का कल्याण हमारा लक्ष्य है। इनकी बेहतरी के लिए हम संकल्पबद्ध होकर प्रयास कर रहे हैं।



प्रधानमंत्री किसान सम्मान निधि देश के किसानों के कल्याण की दिशा में हमारा मजबूत प्रयास है। किसान सम्मान निधि के रूप में हर पात्र किसान के

बैंक खाते में 6000 रुपए सीधे ट्रांसफर किये जा रहे हैं, जिससे वे खाद, बीज और खेती-किसानी के अन्य जरूरी समान खरीद सकें। यह किसानों

की मेहनत का सम्मान है। अब तक हमारी सरकार हजारों करोड़ रुपए की सहायता किसान भाइयों को दे चुकी है। उन्होंने किसानों के प्रति सरकार की प्रतिबद्धता दोहराते हुए कहा कि गांव, गरीब, नारी, युवा और खेती-किसानी की लगातार बेहतरी के लिए हमारे प्रयास आगे भी इसी तरह जारी रहेंगे। केन्द्रीय रक्षा मंत्री श्री सिंह शनिवार को रायसेन के दशहरा मैदान में आयोजित उन्नत कृषि महोत्सव-2026 को संबोधित कर रहे थे। केन्द्रीय रक्षा मंत्री श्री सिंह, मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव एवं केन्द्रीय कृषि एवं किसान कल्याण तथा ग्रामीण विकास मंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान द्वारा त्रि-दिवसीय कृषि महोत्सव प्रदर्शनी एवं प्रशिक्षण कार्यक्रम का दीप प्रज्वलित कर विधिवत् शुभारंभ किया गया।

किसानों के विकास का चल रहा है महायज्ञ : केन्द्रीय कृषि मंत्री सिंह

केन्द्रीय कृषि एवं किसान कल्याण तथा ग्रामीण विकास मंत्री शिवराज सिंह चौहान ने इस अवसर पर कहा कि केन्द्रीय रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह पूर्व में देश के कृषि मंत्री भी रहे हैं। वे स्वयं एक किसान हैं। आज रायसेन की पवित्र धरा पर ज्ञान, विज्ञान, अनुसंधान और कृषि का संगम हो रहा है। यह किसानों के लिए एक पाठशाला की तरह है, जहां किसानों को कृषि की नवीन तकनीकें सीखने का अवसर मिलेगा। रायसेन जिला कृषि सहित हर क्षेत्र में आगे हैं, यहां की धान और गेहूँ दुनियाभर में प्रसिद्ध है। रायसेन में 2 विश्व धरोहर सांघी और भीमबेटिका है। प्रधानमंत्री श्री मोदी के नेतृत्व में हमें शक्तिशाली विकसित भारत बनाना है। देश को मजबूत इरादों वाले प्रधानमंत्री और रक्षामंत्री मिलें।

मध्यप्रदेश के लिए शुभंकर हैं केन्द्रीय मंत्री राजनाथ सिंह : डॉ. यादव

मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा है कि केन्द्रीय रक्षा मंत्री श्री राजनाथ सिंह के हाथों कुछ दिन पहले ही मध्यप्रदेश में बीईएमएल के पहले रेल कारखाने का भूमि-पूजन हुआ है और आज वे किसानों को अपना मार्गदर्शन देने आए हैं। मुख्यमंत्री ने कहा कि श्री राजनाथ सिंह मध्यप्रदेश के लिए शुभंकर केन्द्रीय मंत्री हैं। प्रधानमंत्री श्री मोदी के नेतृत्व में दुनिया में भारत की अलग छवि बन रही है। केन्द्रीय कृषि मंत्री श्री चौहान देश में कृषि क्षेत्र की सफलता की पहचान बन चुके हैं। खेत के श्रमवीर किसानों और सीमा पर शूरवीर जवानों के सम्मान में केन्द्रीय रक्षा मंत्री की उपस्थिति में उन्नत कृषि महोत्सव का यह आयोजन इन दोनों की गरिमा को बढ़ाने वाला है।



संक्षिप्त समाचार

महिला आरक्षण कानून को राजनीतिक हथियार न बनाएं

● थरुत बोले-बिल के साथ परिसीमन प्रक्रिया में जल्दबाजी ठीक नहीं

नई दिल्ली (एजेंसी)। कांग्रेस नेता शशि थरुत ने कहा कि महिला आरक्षण कानून में होने वाले संशोधन को राजनीतिक हथियार की तरह इस्तेमाल नहीं किया जाना चाहिए।



दक्षिण के राज्यों का मुद्दा क्यों उठाया

2023 के कानून में साफ लिखा है कि महिला आरक्षण जनगणना और परिसीमन के बाद ही लागू होगा। परिसीमन यानी जनसंख्या के आधार पर लोकसभा और विधानसभा सीटों की संख्या और सीमाएं तय करना। जनगणना के आंकड़ों के आधार पर एक आयोग सीटों का बंटवारा तय करता है। आखिरी बार परिसीमन 2002-2008 के बीच हुआ था, जो 1971 की जनगणना के आधार पर था। इससे दक्षिण भारत की सीटें कम हो सकती हैं।

पेश कर राज्यसभा से पास कराया था, लेकिन मौजूदा सरकार का रवैया चिंताजनक है। इससे पहले शुक्रवार को कांग्रेस वॉकिंग कमेटी की बैठक में इस मुद्दे पर चर्चा हुई थी। इसमें सरकार के प्रस्तावित संशोधनों पर आपत्ति जताई गई।

मणिपुर में बंगाल के

बीएसएफ जवान की गोली मारकर हत्या

● उखरुल में पेट्रोलिंग ड्यूटी पर तैनात थे, यहां फरवरी से हिंसा जारी है

इंफाल (एजेंसी)। मणिपुर के उखरुल जिले में शुक्रवार को पेट्रोलिंग ड्यूटी पर तैनात बॉर्डर सिक्योरिटी फोर्स के एक कांस्टेबल को गोली मारकर हत्या कर दी गई। अधिकारियों के मुताबिक कांस्टेबल मिथुन मंडल को शाम करीब 4.30 बजे गोली लगी। गोली लगने के बाद उन्हें तुरंत इंफाल के अस्पताल ले जाया गया, जहां शाम करीब 6 बजे उन्होंने दम तोड़ दिया। अधिकारियों ने बताया कि मिथुन मंडल पश्चिम बंगाल के भगजन टोला गांव के रहने वाले थे और 170 बटालियन बीएसएफ में तैनात थे। फरवरी में दो समुदायों के बीच हुई जातीय झड़पों के बाद कुकी गांव में कोट चेपु और पड़ोसी तांगखुल नागा इलाके में गोलीबारी की घटनाएं होती रही हैं। यहां जारी तनाव के बीच पेट्रोलिंग कर रहे बीएसएफ जवान पर यह हमला हुआ है। मणिपुर पुलिस ने बयान जारी कर कहा कि हमले के पीछे शामिल लोगों को पकड़ने के लिए सुरक्षा बल इलाके में सर्च ऑपरेशन और तलाशी अभियान चला रहे हैं। फिलहाल हमलावरों की पहचान सार्वजनिक नहीं की गई है। मुख्यमंत्री वीर खेमचंद सिंह ने कहा- कांस्टेबल मिथुन मंडल की दुखद शहादत की कड़ी निंदा करता हूँ। इस बलिदान को कभी नहीं भुलाया जाएगा।



शराब के नशे में हुए झगड़े के बाद हिंसा शुरू हुई- हिंसा की शुरुआत 7 फरवरी को शाम उखरुल जिले के लितान सरेइखोंग में शराब के नशे में हुए झगड़े से हुई थी, जिसमें तांगखुल नागा समुदाय के स्टर्लिंग नाम के व्यक्ति के साथ मारपीट हुई थी। इसके बाद उपद्रवियों ने उखरुल जिले के लितान सरेइखोंग गांव में 25 घर जला दिए।

अमरनाथ की तरह लागू होगा रेडियो फ्रीक्वेंसी सिस्टम, आपदा रेस्क्यू होगा आसान

चारधाम यात्रा में अब हर पल ट्रैक होगी यात्रियों की लोकेशन

देहरादून (एजेंसी)। चारधाम यात्रा में अब श्रद्धालुओं की हर गतिविधि पर डिजिटल निगरानी रखने की तैयारी है। अमरनाथ यात्रा की तरह रेडियो फ्रीक्वेंसी आइडेंटिफिकेशन सिस्टम लागू करने का सुझाव दिया गया है, जिससे प्रशासन को हर समय यह पता रहेगा कि कौन यात्री कहाँ है और किस रूट पर कितनी भीड़ है। इससे आपदा और भीड़ प्रबंधन दोनों में काफी मदद मिलेगी। राष्ट्रीय आपदा प्रबंधन प्राधिकरण ने चारधाम यात्रा में आने वाले श्रद्धालुओं को जीआईएस टैग देने की सिफारिश की है। यह टैग यात्रियों की लोकेशन ट्रैक करेगा, जिससे प्रशासन को रियल टाइम में हर यात्री की स्थिति की जानकारी मिल सकेगी। यात्रा मार्ग पर जगह-जगह जीआईएस रीडर लगाए जाएंगे। जैसे ही



कोई श्रद्धालु इन पॉइंट्स से गुजरेगा, उसकी जानकारी स्वतः स्कैन होकर कंट्रोल रूम तक पहुंच जाएगी। इससे प्रशासन को रियल टाइम में यह पता रहेगा कि कौन यात्री कहां है, किस रूट पर कितनी भीड़ है और किस समय कौन सा धाम अधिक व्यस्त है।

'समान नागरिक संहिता' के नाम पर आदिवासी अस्मिता से समझौता नहीं

नेता प्रतिपक्ष उमंग सिंघार ने केंद्र सरकार पर सवाल उठाया

भोपाल। मध्यप्रदेश विधानसभा में नेता प्रतिपक्ष उमंग सिंघार ने समान नागरिक संहिता (यूसीसी) को लेकर गहरी चिंता व्यक्त करते हुए कहा है कि यह कानून आदिवासी समाज की पहचान, परंपराओं और संवैधानिक अधिकारों के लिए गंभीर खतरा बन सकता है। उन्होंने कहा कि भारत विविधताओं का देश है, जहां आदिवासी समाज अपनी विशिष्ट सांस्कृतिक विरासत, परंपराओं और सामाजिक व्यवस्थाओं के साथ सदियों से जीवन यापन कर रहा है। ऐसे में एकरूप कानून थोपना न केवल उनकी परंपराओं का अनादर है, बल्कि यह उनके अधिकारों का भी उच्छेदन है।

नेता प्रतिपक्ष ने कहा कि संविधान के अनुच्छेद 44 में यूसीसी को 'राज्य के नीति निर्देशक तत्व' में रखा गया था, क्योंकि संविधान सभा यह समझती थी कि विविधताओं वाले देश में इस विषय पर व्यापक सहमति बनानी होगी। यह कोई तत्काल लागू होने वाला अनिवार्य अधिकार नहीं, बल्कि एक मार्गदर्शक सिद्धांत था। लेकिन बीजेपी सरकार इसे जल्दबाजी, बिना संवाद और बिना लोकतांत्रिक प्रक्रिया के थोपने का प्रयास रही है।

सिंघार ने कहा कि यूसीसी के नाम पर जो एकरूपता थोपी जा रही है, वह 'विविधता में एकता' के हमारे मूल मंत्र को तोड़ती है। आदिवासी समाज की अपनी सामाजिक व्यवस्था, विवाह, उत्तराधिकार और भूमि से



जुड़े रीति-रिवाज सदियों पुराने हैं। पांचवीं और छठीं अनुसूची उन्हें सांस्कृतिक स्वायत्तता देती है। यदि यूसीसी बिना छूट के लागू हुई, तो यह संविधान की भावना के खिलाफ होगा। उन्होंने सरकार के 'समानता' के तर्क पर सवाल उठाते हुए कहा कि समानता का अर्थ एकरूपता नहीं होता, बल्कि हर समुदाय की विशिष्टता को सम्मान देते हुए न्याय सुनिश्चित करना होता है। उन्होंने चिंता जताई कि न तो आदिवासी समाज में विस्तृत चर्चा हो, सभी धर्मों, संगठनों, न पंचायतों, न ही किसी धार्मिक या सामाजिक समूह से चर्चा की गई। बीजेपी की यह 'नया सामान्य' बन गया है! बिना विचार-विमर्श के कानून बनाना। यह

अलोकतांत्रिक, असांप्रदायिक और असंवैधानिक है। सरकार को साफ जवाब देना चाहिए कि क्या यूसीसी आदिवासियों पर लागू होगी? यदि नहीं, तो संरक्षण की गारंटी क्यों नहीं दी जा रही? यह अनिश्चितता जानबूझकर फैलाया गया भय है। सिंघार ने सरकार से स्पष्ट जवाब मांगते हुए कहा कि क्या आदिवासी समुदायों को यूसीसी के दायरे में लाया जाएगा या उन्हें इससे बाहर रखा जाएगा। साथ ही उन्होंने मांग की कि आदिवासी समाज को इस संहिता से बाहर रखा जाए और उनकी परंपराओं व अधिकारों की पूर्ण सुरक्षा सुनिश्चित की जाए।

सिंघार ने कहा कि बिना सहमति और संवाद के लाया गया कानून समाज में बंटवारे का काम करेगा। यूसीसी की घोषणा ने एकता की बजाय अलगाव पैदा किया है। सरकार तृष्णिका की राजनीति छोड़ें, आदिवासी समाज को यूसीसी के दायरे से बाहर रखा जाए और सभी समुदायों को विश्वास में लेते हुए कोई साझा मसौदा तैयार किया जाए। जल्दबाजी और अलोकतांत्रिक तरीका बीजेपी की अस्वच्छिन्न सोच को दर्शाता है। उन्होंने सरकार से अपील की कि इस मुद्दे पर विधानसभा में विस्तृत चर्चा हो, सभी धर्मों, जनजातियों और अल्पसंख्यकों को साथ लेकर ही कोई नीति बने, अन्यथा यह देश की सांस्कृतिक विविधता के लिए घातक साबित होगा।

बीजेपी और ईसी ने की मेरी उम्मीदवारी रद्द करने की कोशिश

● सीएम ममता बनर्जी ने लगाया बड़ा आरोप, बीजेपी रही निशाने पर

कोलकाता (एजेंसी)। पश्चिम बंगाल में बीजेपी और टीएमसी में आरोप-प्रत्यारोप का दौर लगातार जारी है। सीएम ममता बनर्जी ने शनिवार को एक बार फिर बीजेपी पर हमला बोला है। उन्होंने कहा कि बीजेपी ने झूठे मामले दर्ज करवाकर और चुनाव आयोग की मदद से भवानीपुर सीट से उनकी उम्मीदवारी रद्द करवाने की कोशिश की। उन्होंने दावा किया कि उनके पार्टी के कार्यकर्ताओं और जनता ने इस कदम को नाकाम कर दिया। पश्चिम मेदिनीपुर जिले के केशियरी में सीएम ममता बनर्जी ने एक रैली को संबोधित किया। उन्होंने रैली में कहा कि बीजेपी ने चुनाव आयोग की मदद से मेरे खिलाफ झूठे केस दर्ज करवाकर भवानीपुर से मेरी उम्मीदवारी को रद्द करने की कोशिश की, लेकिन हमने उनकी इस साजिश को नाकाम कर दिया। उन्होंने एक बार फिर बीजेपी पर एसआईआर के दौरान वोट लिस्ट में हेरफेर करने का आरोप लगाया।



इस्तीफे से पहले ही सीएम आवास खाली करने लगे नीतिश कुमार

पटना में शिफ्टिंग हो गई शुरू, अब बनेंगे लालू यादव के पड़ोसी

पटना (एजेंसी)। मुख्यमंत्री नीतिश कुमार के राज्यसभा सदस्य के रूप में शपथ लेने के एक दिन बाद ही उनके आधिकारिक आवास से शिफ्टिंग की प्रक्रिया शुरू हो गई है। सीएम पद छोड़ने से पहले ही 1 अग्रे मार्ग से 7 सकुलर रोड स्थित आवास में सामान शिफ्ट किया जा रहा है।

चर्चा है कि मुख्यमंत्री पद छोड़ने के बाद वे इसी आवास में रहेंगे। 10 अप्रैल को राज्यसभा सदस्य के रूप में शपथ लेने के बाद यह कयास लगाए जा रहे हैं।



कि 14 अप्रैल को नीतिश कुमार मुख्यमंत्री पद से इस्तीफा दे सकते हैं। इसके अगले ही दिन बिहार में नई सरकार के गठन की संभावना जताई जा रही है।

हालाकि इसकी आधिकारिक पुष्टि नहीं हुई है। बताया जा रहा है कि हाल के दिनों में उन्होंने 7 सकुलर रोड स्थित इस आवास का एक-दो बार निरीक्षण भी किया था।

लालू परिवार के पड़ोसी बनेंगे नीतिश

7 सकुलर रोड आवास में रहते हुए ही बाद में उन्होंने मांझी को हटाकर दोबारा सत्ता संभाली थी, हालांकि यह बंगला लंबे समय तक उनके कब्जे में रहा। विपक्ष की ओर से 'दो-दो बंगला' रखने के आरोप के बाद इसे मुख्य सचिव के नाम आवंटित कर दिया गया था। यह आवास पूर्व सीएम राबड़ी देवी को आवंटित 10 सकुलर रोड के बंगल में ही स्थित है। ऐसे में मुख्यमंत्री पद छोड़ने के बाद नीतिश कुमार राजद प्रमुख लालू प्रसाद के पड़ोसी बन जाएंगे। जानकारी के अनुसार, इस बंगले में 6 वीआईपी बेडरूम, 2 बड़े ड्राइंग रूम और एक विशाल सभागार मौजूद है।

अब विदेशी निर्भरता खत्म करेगी भारतीय नौसेना

● देश की ही प्राइवेट कंपनियां बनाएंगी मिग-29 के फाइटर जेट्स के पुर्जे ● रखरखाव चुनौतियों का समाधान, नौसेना की परिचालन क्षमता में होगी वृद्धि



नई दिल्ली (एजेंसी)। भारतीय नौसेना ने आत्मनिर्भरता और मेक इन इंडिया को बढ़ावा देने के लिए एक महत्वपूर्ण पहल की है। नौसेना ने अपने रूसी मूल के मिग-29 के लड़ाकू विमानों की महत्वपूर्ण उप-प्रणालियों और परीक्षण प्रणालियों के स्वदेशी विकास के लिए भारतीय निजी

कंपनियों को आमंत्रित किया है। भारतीय नौसेना के इस पहल का उद्देश्य विदेशी आपूर्तिकर्ताओं पर निर्भरता कम करना और महत्वपूर्ण विमान घटकों पर भारत की आत्मनिर्भरता को मजबूत करना है। ताकि समुद्री सीमाओं की सुरक्षा में तैनात यह लड़ाकू विमान हर समय युद्ध के लिए तैयार रहे।

मिग-29 अत्याधुनिक लड़ाकू विमान

दरअसल, मिग-29के अत्याधुनिक, हर मौसम में कारगर रहने वाला सुपरसोनिक बहु-भूमिका लड़ाकू विमान है, यह भारतीय नौसेना का प्रमुख विमानवाहक पोत आधारित हमलावर विमान है। यह आईएनएस

विक्रमादित्य और आईएनएस विक्रान्त से संचालित होता है और हवाई वर्चस्व, समुद्री हमले और समुद्री नियंत्रण पर विशेष ध्यान देता है। नौसेना को इसके रखरखाव, पुर्जों की उपलब्धता और सेवायोग्यता से संबंधित चुनौतियों का सामना करना पड़ा है। कई बार ऐसा देखने में आया है कि विमानों के मेटेंस को जरूरतें समय पर पूरा नहीं हो पाती, ऐसे में भारतीय नौसेना ने मिग-29 के फाइटर जेट्स की परिचालन क्षमता और रखरखाव को मजबूत करने के लिए स्वदेशी निजी कंपनियों, एमएसएमई और रक्षा फर्मों को आमंत्रित किया है। नौसेना ने उन प्रतिष्ठित भारतीय फर्मों को आमंत्रित किया है, जिनके पास इस परियोजना को क्रियान्वित करने के लिए तकनीकी और वित्तीय क्षमता, बुनियादी ढांचा और अनुभव हो। ये फर्म भारत में स्थित हों और जिनके पास इस परियोजना को क्रियान्वित करने की तकनीकी और वित्तीय क्षमता, बुनियादी ढांचा और अनुभव हो। यह निजी कंपनियों संभवतः रक्षा क्षेत्र के सार्वजनिक उपक्रमों और अनुसंधान संगठनों के साथ मिलकर काम करेंगी। इस कदम का उद्देश्य स्वदेशी विनिर्माण क्षमताओं को मजबूत करना और आपूर्ति श्रृंखला नियंत्रण के माध्यम से राष्ट्रीय सुरक्षा को बढ़ाना है।

भोपाल पहुंचते ही रोकी गई आंगनवाड़ी न्याय पदयात्रा

11 दिन में 200 किमी तय किए आंगनवाड़ी-आशा कार्यकर्ताओं को सरकारी दर्जा देने की मांग



भोपाल (नप्र)। आंगनवाड़ी और आशा कार्यकर्ताओं को सरकारी कर्मचारी का दर्जा दिलाने की मांग को लेकर निकले छात्र नेता रामकुमार नागवंशी की पदयात्रा भोपाल पहुंचते ही रुक गई। करीब 200 किलोमीटर की यात्रा कर राजधानी पहुंचे नागवंशी और उनके साथियों को पुलिस ने बरकतुल्ला युनिवर्सिटी के पास रोक लिया। इसके बाद उन्हें आगे बढ़ने से मना करते हुए एक होटल के पास बैठा दिया गया। आंगनवाड़ी कार्यकर्ताओं की मांगों को लेकर शुरू की गई 200 किलोमीटर लंबी पदयात्रा के जरिए सरकार तक अपनी आवाज पहुंचाने की कोशिश की जा रही है। यह पदयात्रा 1 अप्रैल (बुधवार) को बैतूल जिले के अडेडकर चौक से शुरू हुई थी, जिसका लक्ष्य 11 दिनों में भोपाल पहुंचना था।

आंगनवाड़ी न्याय पदयात्रा के नाम से शुरू किया आंदोलन - पूर्व में एनएसयूआई से जुड़े रहे रामकुमार नागवंशी ने इस अभियान को आंगनवाड़ी न्याय पदयात्रा नाम दिया। उनका कहना है कि गांव-गांव जाकर सेवा देने वाली आंगनवाड़ी और आशा कार्यकर्ताओं को अब तक न तो सम्मानजनक वेतन मिला है और न ही सरकारी कर्मचारी का दर्जा।

परिवार के संघर्ष से मिला आंदोलन का संकल्प - नागवंशी ने बताया कि उनकी भाभी और बहन स्वयं आंगनवाड़ी कार्यकर्ता हैं। उनके संघर्ष को करीब से देखने के बाद ही उन्होंने यह पदयात्रा शुरू करने का निर्णय लिया। उन्होंने कहा कि यह लड़ाई केवल उनकी नहीं, बल्कि लाखों महिलाओं के अधिकारों की है, जो वर्षों से न्यूनतम सुविधाओं के साथ काम कर रही हैं।

भोपाल पहुंचते ही पुलिस ने रोका

रामकुमार नागवंशी ने बताया कि जब वे सुबह करीब 8-45 बजे बरकतुल्ला युनिवर्सिटी के पास पहुंचे, तभी पुलिस ने उन्हें और उनके साथियों को रोक लिया। उन्होंने आरोप लगाया कि उन्हें आगे मुख्यमंत्री निवास की ओर नहीं जाने दिया जा रहा और पास के एक होटल के बाहर बैठा दिया गया है।

गेहूं की त्वालटी जांचने केन्द्र से भोपाल पहुंची टीम

खरीदी केन्द्रों पर पहुंचे अफसर, आंधी-बारिश की वजह से दाना सिकुड़ा मिला भोपाल (नप्र)। आंधी और बारिश से बर्बाद हुई गेहूं की फसल की जांच करने के लिए केन्द्र से एक टीम भोपाल पहुंची है। पिछले दो दिन में यह टीम एक दर्जन गेहूं खरीदी केन्द्रों का निरीक्षण कर चुकी है। टीम देख रही है कि आंधी-बारिश से गेहूं की क्वालिटी कितनी खराब हुई है?



टीम यह रिपोर्ट केन्द्र सरकार को सौंपेगी। ताकि, नुकसान का आंकलन हो सके। टीम शुक्रवार को ही भोपाल पहुंच गई थी। शनिवार को भी कई केन्द्रों पर टीम ने निरीक्षण किया। बता दें कि भोपाल में समर्थन मूल्य पर गेहूं खरीदी के 92 केंद्र बनाए गए हैं। गेहूं का दाना सिकुड़ा मिला बताया जाता है कि निरीक्षण के दौरान टीम को कई जगहों पर गेहूं की क्वालिटी ठीक नहीं मिली। दाना सिकुड़ा मिला तो रंग भी कमजोर था। शनिवार को भारत सरकार की खाद्य मंत्रालय की टीम ने लेक्चर लॉस गेहूं के संबंध में केन्द्रों का निरीक्षण किया। इनमें स्टील साइलो मुगालिया कोर्ट, सुविधा वेयर हाउस निपानिया, आर्य वेयर हाउस निपानिया टाकुर, शिव वेयर हाउस भौरासा एवं सोनिका वेयर हाउस खरीदी केन्द्रों का निरीक्षण किया गया। जिसमें मिनिस्ट्री की टीम के अधिकारी, खाद्य विभाग, नागरिक आपूर्ति निगम एवं वेयर हाउस के अधिकारी शामिल थे।

अच्युतानंदन ने किया सप्रे संग्रहालय का अवलोकन

भोपाल। देश के वरिष्ठ पत्रकार एवं संपादक तथा माखनलाल चतुर्वेदी राष्ट्रीय पत्रकारिता एवं संचार विश्वविद्यालय के पूर्व कुलगुरु अच्युतानंदन मिश्र, विवि के वर्तमान कुलगुरु विजय मनोहर तिवारी, सप्रे संग्रहालय के संस्थापक पद्मश्री विजयदत्त श्रीधर, प्रोफेसर संजय द्विवेदी, स्वदेश अखबार के प्रधान संपादक राजेंद्र शर्मा, दत्तोपत टेंगडी शोध संस्थान के निदेशक मुकेश कुमार मिश्र तथा एकात्म धाम के न्यासी सचिव मनीष पांडे के साथ ज्ञानतीर्थ माधवराव सप्रे समाचार



पत्र संग्रहालय में भ्रमण करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। इस अवसर पर सप्रे संग्रहालय के संस्थापक विजयदत्त श्रीधर ने संग्रहालय में उपलब्ध विपुल ज्ञान-संपद तथा वहीं संरक्षित ऐतिहासिक सामग्री के संबंध में विस्तृत जानकारी प्रदान की।

‘बड़ी बेशर्मी से कहा नहीं गाऊंगी’

वंदे मातरम के अपमान पर भड़के सीएम मोहन यादव, कांग्रेस से मांगा इस्तीफा

भोपाल (नप्र)। इंदौर नगर निगम के बजट सम्मेलन के दौरान शुरू हुआ ‘वंदे मातरम’ विवाद अब पूरे प्रदेश की राजनीति का केंद्र बन गया है। कांग्रेस पार्षदों द्वारा सार्वजनिक रूप से राष्ट्रगीत गाने से इनकार करने पर मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने बेहद कड़ी प्रतिक्रिया दी है। मुख्यमंत्री ने इसे देशभक्तों का अपमान बताते हुए कहा कि अगर कांग्रेस नेतृत्व इस पर कार्रवाई नहीं कर सकता, तो पूरी प्रदेश इकाई को इस्तीफा दे देना चाहिए। इंदौर नगर निगम में कांग्रेस पार्षद रुबीना इकबाल खान और फौजिया शेख अलीम ने धर्म का हवाला देकर वंदे मातरम गाने से मना कर दिया था। इस घटना का वीडियो सामने आने के बाद मुख्यमंत्री ने भोपाल में मीडिया से चर्चा करते हुए कहा कि बड़े दुर्भाग्य के साथ कहना पड़ रहा है कि कांग्रेस की पार्षद ने बेशर्मी के साथ कहा कि मैं नहीं गाऊंगी। यह केवल एक पार्षद का बयान नहीं, बल्कि कांग्रेस के उस चरित्र को दर्शाता है जो हमेशा से राष्ट्र प्रतीकों के खिलाफ रहा है।



मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने की केंद्रीय रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह की आत्मीय अगवानी

भोपाल (नप्र)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने केंद्रीय रक्षा मंत्री श्री राजनाथ सिंह की शनिवार को भोपाल के स्टेट हैंगर पर आत्मीय अगवानी की। केंद्रीय रक्षा मंत्री श्री सिंह रायसेन में आयोजित कृषि महोत्सव प्रदर्शनी एवं प्रशिक्षण कार्यक्रम के शुभारंभ के लिए ट्रांजिट विजिट पर स्टेट हैंगर भोपाल आये। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने केंद्रीय रक्षा



मंत्री श्री सिंह का पुष्प-गुच्छ एवं शॉल ओढ़कर प्रदेश में आत्मीय स्वागत-अभिन्दन किया। मुख्यमंत्री ने केंद्रीय रक्षा मंत्री को स्मृति चिन्ह भी भेंट किया। स्टेट हैंगर में अल्प-विश्राम के बाद केंद्रीय रक्षा मंत्री श्री सिंह, मुख्यमंत्री डॉ. यादव तथा केंद्रीय किसान कल्याण एवं ग्रामीण विकास मंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान भारतीय सेना के हेलीकॉप्टर से रायसेन के लिए रवाना हुए। पंचायत एवं ग्रामीण विकास मंत्री श्री प्रहलाद सिंह पटेल, खेल एवं युवा कल्याण मंत्री श्री विश्वास कैलाश सारंग, पिछड़ा वर्ग एवं अल्पसंख्यक कल्याण राज्यमंत्री (स्वतंत्र प्रभार) श्रीमती कृष्णा गौर, भोपाल के लोकसभा सांसद श्री आलोक शर्मा, विधायक श्री विष्णु खत्री, महापौर श्रीमती मालती राय, जिलाध्यक्ष श्री रविन्द्र यति, जनप्रतिनिधि एवं वरिष्ठ अधिकारियों ने भी केंद्रीय मंत्री श्री सिंह को पुष्प-गुच्छ भेंट किए।

पूर्व राजदूत दीपक भोपाल में बोले-

ईरान के साथ कोई खुलकर नहीं; खाड़ी देशों पर हमला उसकी बड़ी भूल

भोपाल (नप्र)। अमेरिका के राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप की कार्यशैली, पाकिस्तान की तथाकथित मध्यस्थता और भारत की विदेश नीति को लेकर पूर्व राजदूत दीपक वोहरा ने तीखा और अलग नजरिया रखी। उनका कहना है कि आज अमेरिका पहले से ज्यादा आइसोलेटेड दिख रहा है। वहीं ईरान के साथ भी कोई देश खुलकर खड़ा नहीं है।

खाड़ी देशों पर हमला करना ईरान की बड़ी रणनीतिक गलती रही। पाकिस्तान को उन्होंने दमहीन बताते हुए उसकी मध्यस्थता के दावे खारिज किए, जबकि भारत की रणनीति को स्ट्रेटेंजिक साइलेंस और परिपक्व डिप्लोमेसी का उदाहरण बताया। बता दें कि दीपका वोहरा शौर्य गाथा और शौर्य अंशकाल कार्यक्रम में भाग लेने के लिए भोपाल पहुंचे हैं।

● अमेरिका आज पहले से ज्यादा आइसोलेटेड- दीपक वोहरा ने

पाकिस्तान डोनाल्ड ट्रंप का पालतू

कहा कि अमेरिका और ईरान के बीच चल रहे तनाव में दोनों पक्षों की बातों में विरोधाभास साफ नजर आता है। एक ओर ईरान कहता है कि उसे कोई नुकसान नहीं हुआ, वहीं दूसरी ओर 200 बिलियन डॉलर मुआवजे की मांग करता है। उनके मुताबिक अगर नुकसान नहीं हुआ तो मुआवजा क्यों? उन्होंने कहा कि अमेरिका आज पहले से ज्यादा आइसोलेटेड नजर आ रहा है, जबकि ईरान के साथ भी कोई देश खुलकर खड़ा नहीं है। खाड़ी देशों पर हमला करना ईरान की बड़ी रणनीतिक गलती रही। चाणक्य का हवाला देते हुए उन्होंने कहा कि युद्ध में उतरने से पहले अपनी और विरोधी की ताकत का आकलन जरूरी है, लेकिन ईरान यह जानते हुए भी भिड़ गया कि उसे नुकसान



उठाना पड़ेगा।

● संयुक्त राष्ट्र बेकार की संस्था- गाजा पट्टी के हालात पर उन्होंने संयुक्त राष्ट्र को बेकार की संस्था बताया और कहा कि वहां भारी तबाही हुई है, जिसकी भरपाई में

दशकों लगेगें। उन्होंने कहा कि जंग में सबसे पहले सच्चाई मरती है और हर देश अपने हिसाब से प्रोपेगेंडा करता है। जो नुकसान हुआ है, उसे छिपाया जाता है और वही दिखाया जाता है जहां कुछ नहीं हुआ, उन्होंने कहा। ईरान के परमाणु कार्यक्रम पर उन्होंने कहा कि यह दशकों की तैयारी का नतीजा है और उसका तर्क यह है कि नॉर्थ कोरिया पर हमला इसलिए नहीं होता क्योंकि उसके पास परमाणु हथियार हैं।

● हमास और हिज्बुल्ला स्कूल और अस्पतालों में रखते हैं हथियार- उन्होंने कहा कि हमास और हिज्बुल्ला जैसे संगठन स्कूल और अस्पतालों में हथियार रखते हैं, जिससे युद्ध में निर्णय लेना बेहद कठिन हो जाता है। अगर अस्पताल के नीचे हथियार हैं तो क्या करेंगे, यह सबसे कठिन

सवाल है, उन्होंने कहा। ● सीजफायर में पाकिस्तान की कोई भूमिका नहीं- पाकिस्तान के सीजफायर कराने के दावे को खारिज करते हुए दीपक वोहरा ने कहा कि यह फैसला अमेरिका और ईरान के बीच हुआ, पाकिस्तान की इसमें कोई भूमिका नहीं थी। उन्होंने कहा कि सीजफायर तब हुआ जब पिटाई हो रही थी। 1971 के युद्ध का उदाहरण देते हुए उन्होंने कहा कि असली लीडशिप वही होती है जब आप खुद तय करें कि कब युद्ध खत्म करना है। कारगिल का जिक्र करते हुए उन्होंने कहा कि उस समय पाकिस्तान का नेतृत्व अमेरिका के पास मदद के लिए गया था। उन्होंने साफ कहा कि पाकिस्तान के पास ऐसी कोई क्षमता नहीं है कि वह बड़े देशों के बीच मध्यस्थता कर सके।

मादा चीता गामिनी ने 4 शावकों को जन्म दिया

कूने नेशनल पार्क में बढ़ा कुनबा, भारत में चीतों की संख्या अब 57 हुई

श्यापुर (नप्र)। मध्य प्रदेश के श्यापुर स्थित कूने नेशनल पार्क से चीता संरक्षण परियोजना के लिए बड़ी खुशखबरी सामने आई है। करीब 25 माह की भारतीय मूल की मादा चीता ‘गामिनी’ ने जंगल में 4 शावकों को जन्म दिया है। इस जन्म के साथ ही देश में चीतों की कुल संख्या बढ़कर 57 हो गई है। केंद्रीय पर्यावरण मंत्री भूपेंद्र यादव ने शनिवार को सोशल मीडिया पर पोस्ट साझा कर इस सफलता पर खुशी जताई। वन विभाग की टीम और इस परियोजना से जुड़े सभी कर्मचारियों को बधाई दी। उन्होंने कहा कि कूने नेशनल पार्क में चल रही चीता संरक्षण परियोजना को यह एक बड़ी सफलता मिली है।

पहली बार जंगल में सफल प्रसूति- मंत्री भूपेंद्र यादव के अनुसार, 2022 में चीता पुनर्स्थापन कार्यक्रम शुरू होने के



बाद यह पहली बार है, जब किसी चीता ने प्राकृतिक जंगल वातावरण में शावकों को जन्म दिया है। यह उपलब्धि इसलिए भी खास है, क्योंकि यह किसी भारतीय मूल की मादा चीता की पहली सफल प्रसूति मानी जा रही है।

प्राकृतिक माहौल में ढल चुकी थी गामिनी

वन विभाग के अधिकारियों ने बताया कि मादा चीता गामिनी पिछले एक साल से अधिक समय से खुले जंगल में रह रही थी और वह प्राकृतिक परिस्थितियों के अनुरूप पूरी तरह ढल चुकी थी। जंगल में शावकों का जन्म इस बात का संकेत है कि कूने का पर्यावरण अब चीतों के लिए अनुकूल साबित हो रहा है और वे यहां सुरक्षित रूप से प्रजनन कर पा रहे हैं।

मुख्यमंत्री ने महात्मा ज्योतिबा फुले की जयंती पर किया नमन

भोपाल। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने सम्मानता, शिक्षा और सामाजिक न्याय के प्रबल अग्रदूत, महात्मा ज्योतिबा फुले की जयंती पर पुण्य स्मरण कर उन्हें नमन किया है। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि महात्मा फुले ने कुरीतियों और असमानता के खिलाफ खुलकर आवाज उठाई और शिक्षा के जरिए महिलाओं और वंचितों के लिए अवसर सृजित किए। उनके विचार हम सबको समरसता और मानवता के मार्ग पर चलने की प्रेरणा देते हैं।

सीएम हाउस के पास

साइकिलिंग कर रहे डॉक्टर की आंखों में मिर्च झाँककर सोना और कैश लूटा

गिरे तो कूल्हा भी टूटा

भोपाल (नप्र)। राजधानी के सबसे हाई-प्रोफाइल और सुरक्षित माने जाने वाले श्यामला हिल्स इलाके में बदमाशों ने दुस्साहस की सभी हद्दें पार कर दीं। मुख्यमंत्री आवास से कुछ ही दूरी पर स्थित किलोली पार्क के पास बाइक सवार लुटेरों ने एक सीनियर डॉक्टर को अपना शिकार बनाया। बदमाशों ने डॉक्टर की आंखों में मिर्च झाँक दी और उनका 110 ग्राम वजनी सोने का ब्रेसलेट, स्मार्टवॉच और बटुआ लूटकर फरार हो गए।

साइकिलिंग से लौट रहे डॉक्टर को घेरा- प्रोफेसर कॉलोनी निवासी डॉ. मनोज वर्मा, जो राज्य टीबी प्रशिक्षण केंद्र के निदेशक हैं, शुक्रवार सुबह करीब 10 बजे अपनी नियमित साइकिलिंग के बाद घर लौट रहे थे। किलोली पार्क और एक आइसक्रीम पालर के बीच मुख्य सड़क पर पीछे से आए बाइक सवारों ने जानबूझकर उनकी साइकिल में टकरा मार दी। डॉक्टर के गिरते ही बदमाशों ने उनके चेहरे पर लाल मिर्च पाउडर का छिड़काव कर दिया ताकि वे कुछ देख न सकें। रेकी और साजिश का शक, कूल्हा टूटा- हमला इतना जोरदार था कि गिरने की वजह से डॉ. वर्मा के कूल्हे में फ्रैक्चर हो गया



है। बदमाशों ने तुरंत उनके हाथ से सोने का भारी ब्रेसलेट, स्मार्टवॉच और करीब 2500 रुपये नकद वाला बटुआ छीन लिया। पुलिस को संदेह है कि बदमाशों ने डॉक्टर की दिनचर्या की पहले से रेकी की थी।

बदमाशों के काम करने के तरीके से लगता है कि उन्हें डॉक्टर के आने-जाने के समय और उनके पास मौजूद कीमती सामान की पूरी जानकारी थी। यह एक सुनिश्चित चारदात हो सकती है।

● सुरक्षा पर उठे बड़े सवाल- यह वारदात महज एक घटना नहीं है, बल्कि भोपाल पुलिस की सुरक्षा व्यवस्था पर बड़ा सवालिया निशान है। जिस श्यामला हिल्स इलाके में 24 घंटे वीदीआईपी मूवमेंट रहता है और चप्पे-चप्पे पर पुलिस तैनात होती है, वहां दिनदहाड़े इस तरह की वारदात होना पुलिस गश्त की पोल खोलता है। डॉक्टर फिलहाल अस्पताल में उपचारधीन हैं और पुलिस इलाके के सीसीटीवी फुटेज खंगाल रही है ताकि साक्ष्यों की पहचान की जा सके।

हरदा के एक गांव में आग से 8 मकान जलकर राख

शॉर्ट सर्किट होने की आशंका

हरदा (नप्र)। हरदा जिले की ग्राम पंचायत बड़झिरी में शनिवार दोपहर आग लग गई। इस अग्निकांड में 7 से 8 मकान जलकर राख हो गए।

घटना दोपहर करीब साढ़े तीन बजे हुई। आग से घरों में राख गृहस्थी का सारा सामान जलकर राख हो गया। हादसे में 7 बकरियां, एक बैल और एक टैक्टर भी जल गए। हालांकि, किसी जनहानि की सूचना नहीं है, जिससे बड़ी राहत मिली है।

कला
पंकज तिवारी
कला समीक्षक



कला में भारतीयता की जब भी बात आती है कथा चित्रण और संस्कृति पर भी विचार किया जाता है, कला संबंधी अभिप्राय और अलंकरणों पर भी बात करनी होती है। भरहुत, बोधगया से लेकर कोणार्क, सांची, सारनाथ, मथुरा, अजंता, एलोरा या फिर खजुराहो तक में कथा चित्रण के साथ ही अभिप्राय और अलंकरणों की अधिकता है जो संपन्नता को दर्शाती है हालांकि कहीं कहीं अलंकरण की अधिकता बोझिल सी बन पड़ी है पर ऐतिहासिक पृष्ठभूमि पर हम बात करें तो प्राचीन ग्रंथों पर गजब की पकड़ होती थी कलाकारों की फलतः हम कह सकते हैं कि तब कलाकार अभ्यास के साथ ही अध्ययन भी खूब किया करते थे। कला एवं साहित्य के आपसी मेल मिलाप का असर कहें या एक दूसरे में खो जाने की मानसिकता का प्रतिफल पर सच्चाई यही है कि तब कृतियों से लोगों का जुड़ाव ज्यादा हो पाता था। कृतियों के साथ पूरा कथानक जुड़ा होता था। धार्मिक, साहित्यिक, ऐतिहासिक पृष्ठभूमि कोई सी भी रही हो पर कलाकार उसके कथानक को आत्मसात करने के बाद ही अपने सृजन में जुटता था। कृतियों में देवांगना, शालभंजिका, प्रेक्षणिा, मातृदेवी, सिंह, या फिर ऐसे ही तमाम और भी उत्कीर्ण या फिर अंकित आकृतियां भारतीय कला के समृद्धि की कारण रही हैं। किसी विचार या भाव को दृश्य रूप प्रदान करना ही कला का मुख्य कार्य रहा है कथा चित्रण भी इसी का विस्तारित रूप है। कथा चित्रण और संस्कृति पर चर्चा के पूर्व संस्कृति पर दृष्टिपात बहुत जरूरी है। संस्कृति समाज का एक अभिन्न अंग है जिससे समाज और भी निखर कर परिष्कृत होता है। संस्कृति ही है जो समाज को पीढ़ी दर पीढ़ी निखरने के मार्ग प्रशस्त करती है तथा अच्छे व बुरे को विलग करने की विलक्षण शक्ति प्रदान करती है। कला और संस्कृति यदि अपभ्रंशित हो गयी तो समाज खोखला हो जाता है, रिड विहीन हो जाता है, अतः हमें अपनी संस्कृति को बचाकर, संवार कर तथा परिष्कृत रूप

भारतीय कला, संस्कृति एवं कथा चित्रण

कला एवं साहित्य के आपसी मेल मिलाप का असर कहें या एक दूसरे में खो जाने की मानसिकता का प्रतिफल पर सच्चाई यही है कि तब कृतियों से लोगों का जुड़ाव ज्यादा हो पाता था। कृतियों के साथ पूरा कथानक जुड़ा होता था। धार्मिक, साहित्यिक, ऐतिहासिक पृष्ठभूमि कोई सी भी रही हो पर कलाकार उसके कथानक को आत्मसात करने के बाद ही अपने सृजन में जुटता था। कृतियों में देवांगना, शालभंजिका, प्रेक्षणिा, मातृदेवी, सिंह, या फिर ऐसे ही तमाम और भी उत्कीर्ण या फिर अंकित आकृतियां भारतीय कला के समृद्धि की कारण रही हैं। किसी विचार या भाव को दृश्य रूप प्रदान करना ही कला का मुख्य कार्य रहा है कथा चित्रण भी इसी का विस्तारित रूप है। कथा चित्रण और संस्कृति पर चर्चा के पूर्व संस्कृति पर दृष्टिपात बहुत जरूरी है। संस्कृति समाज का एक अभिन्न अंग है जिससे समाज और भी निखर कर परिष्कृत होता है।

में सुधार कर हमेशा आने वाली पीढ़ी को सौंपना चाहिए ताकि ऐसे ही कुछ सुधार कर वो अपने आगे की पीढ़ी को दे सकें। संस्कृति को बचाने का कार्य करती है कला या दूसरे शब्दों में कहें तो कथा चित्रण भी। कला में ही लोक के सांस्कृतिक परिवेश, परंपरा की विस्तारित व्याख्या होती है। खाली दीवारों को अशुभ मानने की परंपरा भी भारत में रही है। सांस्कृतिक, मांगलिक आदि शुभ आयोजनों में अलंकृत, विवरणात्मक आदि कृतियों का सृजन और ऐसे मौकों पर सभी का दर्शकों का स्वतः जुड़ाव हो जाना भारतीय कला की थाती रही है जो लोक संस्कृतियों के माध्यम से आज भी जंदा है। संस्कृति सामाजिक विकास को प्रेरणा प्रदान करती है। संस्कृति के चर्चा पर के. एम. मुंशी के बोल-हमारे रहन-सहन के पीछे जो मानसिक अवस्था, मानसिक प्रवृत्ति है, जिसका उद्देश्य हमारे जीवन को परिष्कृत, शुद्ध और पवित्र बनाना है तथा अपने लक्ष्य की प्राप्ति करना है, वही संस्कृति है। रही बात भारतीय कला में संस्कृति की तो झुटलाया नहीं जा सकता कि प्राणैतिहासिक से लेकर आज तक हमारे यहां के हर कला में संस्कृति की झलक बेशुमार प्रवाहित है।

कथा चित्रण और संस्कृति के विषय में यह विदित है कि रामायण, महाभारत, गीतगोविंद, बालगोपाल तमाम पर आधारित चित्र पाये गये। अजन्ता, बाघ, जोगीमारा आदि में अधिकतर चित्र किसी न किसी

समझा गया था, हालांकि था नहीं, से प्राप्त शिलालेखानुसार- यह वरुण देवता का मन्दिर था और जैन धर्म का इसकी कला पर प्रभाव था, वरुण देवता के सेवा में ‘‘सुतनुका’’ नामक देवदासी रहती थी। इनसे सम्बन्धित कहानियों का चित्रण जोगीमारा में मिलता है। जोगीमारा में ही संभवतः पौराणिक गजग्रह कथा का चित्रण भी प्राप्त हुआ है। अजन्ता से स्तूप पूजा का जो चित्र प्राप्त हुआ है जिसमें लगभग सोलह व्यक्तियों का समूह दर्शाया गया है वह भी कथा पर ही आधारित है जहां किसी राजा अथवा श्रेष्ठी द्वारा चैत्य को बनवा कर संघ को



घटना पर ही आधारित है जहां पर चित्रों के साथ ही घटना का भी जिक्र किया गया है। इलेस्ट्रेशन भाषाओं के डोर में नहीं बंधा है बल्कि किसी भी देश, दुनिया, धर्म के लोग इसे आसानी से समझ सकते हैं और समझ कर अपने कर्तव्य को समाज के अनुकूल परिवर्तित कर सकते हैं। जोगीमारा गुफा जिसे पहले एक देवदासी का निवास

ग्रिफिक्स महोदय का मत- फ्लोरेंस का चित्रकार इससे अच्छे रेखांकन कर सकता था और वेनिस का कलाकार अच्छे रंग भर सकता था, किन्तु दोनों में से कोई इससे अधिक सुंदर भाव का प्रदर्शन नहीं कर सकता था। उन्ही के दूसरे शब्दों में- भावना, करुणा तथा कथा चतुर्व्य की दृष्टि से इससे बढ़कर कला इतिहास में कोई प्रमाण नहीं है। अजन्ता के लगभग सभी चित्र किसी न किसी घटना या कहानी पर ही आधारित है, मतलब कथा चित्रण का ही एक रूप है अजन्ता। पाल शैली में भी साधनमाला, गन्धर्व्यूह, करनदेवगुहा, पंचशिखा जैसी पोथियां प्राप्त हुई हैं जो कथा चित्रण युक्त हैं। गुजरात में बसंत बिलास नामक दृष्टंक चित्रण प्राप्त होता है जो कालीदास की रचना ऋतुसंहार पर आधारित है जिसमें विशेषतः फाल्गुन मास का मोहक चित्रांकन हुआ है, कविराज विल्हण और उनकी प्रेयसी चम्पावती की प्रणयलीला का चित्रांकन विल्हण कृत चौर पंचाशिका में अंकित है। मार्कण्डेय पुराण, दुर्गाशसस्ती, रतिरहस्य, कामसूत्र सम्बन्धी चित्र जैन कलाकारों द्वारा निर्मित किये गये। अगर देखा जाय तो रतिरहस्य, दुर्गाशसस्ती, बालगोपालस्तुति आदि से सम्बन्धित शैली के चित्रों का निर्माण सातवीं शताब्दी से ही गुजरात, मारवाण में होने लगा था। मुगल कालीन चित्रावलिओं में हज्जानामा भी विशेष है जिसके चित्र सूती कपड़े पर बनाये गये थे। अकबरनामा भी कम महत्वपूर्ण नहीं है, अनवर-ए-सुहैली, रम्जानामा, आदि भी कथा चित्रण के इतिहास को बखूबी बयां करते से प्रतीत होते हैं। चित्र गूगल से साभार।

मुद्दा
बृजमोहन श्रीवास्तव
राष्ट्रीय महासचिव एवं मुख्य राष्ट्रीय प्रवक्ता राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी



आज देश में सबसे चर्चित विषय महिला आरक्षण है और इसका महत्व देश के प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदीजी के लेख से और अधिक हो गया है। इसलिए यह जरूरी है कि इस आरक्षण के लिये हमारी तैयारी पर भी बात होना चाहिए।

बात 1993-94 की है, जब मध्य प्रदेश में 73वें संविधान संशोधन के बाद पहली बार पंचायती राज संस्थाओं के चुनावों की घोषणा हुई। चूंकि ये चुनाव किसी राजनीतिक दल के चुनाव चिन्ह पर नहीं होने थे, इसलिए सभी नेता अपने-अपने समर्थित उम्मीदवारों को मैदान में उतारने की तैयारी में थे।

मैंने व भोपाल सेंट्रल कोऑपरेटिव बैंक के अध्यक्ष, स्वतंत्रता संग्राम सेनानी अनिरुध प्रसाद शास्त्री जी ने यह निर्णय लिया कि हम भोपाल जिले की सभी पंचायतों व अन्य स्थानों में अपने प्रत्याशी खड़े करेंगे।

चुनाव की तैयारी के प्रथम चरण में जब महिला प्रत्याशियों की तलाश शुरू की तो हमें भारी कठिनाइयों का सामना करना पड़ा क्योंकि संशोधन के कारण 33 प्रतिशत पद महिलाओं के लिये आरक्षित तो थे ही मगर उसमें भी पिछड़ा वर्ग, अनुसूचित जाति तथा अनुसूचित जनजाति के लिए भी आरक्षण निर्धारित था। इसके चलते योग्य और इच्छुक महिला उम्मीदवारों का मिलना कठिन था। जनपद सदस्य के लिये एक वार्ड अनुसूचित

महिला आरक्षण- नया आयाम, क्यों जरूरी?

जाति की महिला के लिए आरक्षित था। जब हमने उस वार्ड के लिए मतदाता सूची में महिला प्रत्याशी की तलाश शुरू की तो समझ आया कि चयन बहुत सीमित मतदाताओं में से ही करना पड़ेगा। तब हमें अपने एक समर्थक के खेत में काम करने वाली आठवीं पास युवा महिला-आशा मिली।

जब हमने उस युवती के सामने चुनाव लड़ने का प्रस्ताव रखा उसने आश्चर्य के साथ बस इतना ही कहा जैसा भैया बोलें मगर उसका अगला सवाल था - रोजी रोटी का क्या होगा और करना क्या पड़ेगा ? हमने उसे बताया कि चुनाव में लोगों से वोट मांगना होगा और जीतने के बाद जनपद सदस्य के रूप में जनता के लिए काम करना होगा। वहीं मेरे समर्थक ने उसे नौकरी चलते रहे का आश्वासन दिया। अपने पति से बातचीत कर वह चुनाव के लिए तैयार हो गई। उसके नामांकन के बाद चुनाव प्रचार के दौरान मैंने उसे वोट मांगते समय उसमें आ रहे बदलाव को करीब से महसूस किया और इस बदलाव को छलक एक छोटी-सी आम सभा में देखी। हम सभी का मानना था कि वह भाषण नहीं देगी मगर उसने सबको गुलत साबित करते हुए भाषण दिया और ऐसा बोला कि देर तक तालियां बजती रहीं। उसने बहुत ही सरल, लेकिन आत्मविश्वास से भरे शब्दों में कहा- मैं इसी गांव की बेटी हूँ। जब मैं यहाँ से निकलती थी, तो मेरे पैर मिट्टी में सन जाते थे। अगर मैं चुनाव जीती तो मेरी कोशिश होगी कि अब गाँव में किसी भी बेटी के पैर मिट्टी में नहीं सने। उसके ये शब्द वहीं उपस्थित हर व्यक्ति के मन में गहराई तक

उतर गए थे। मैंने उस कम शिक्षित, मजदूर आशा को आशा देवी बनने की यात्रा को करीब से देखा। मैं एक साधारण महिला को राजनेता बनते देख रहा था और यह इसलिए हो रहा था क्योंकि मुकाबले में महिलायें ही थीं। वह चुनाव तो हार गई मगर चुनाव लड़ने से उसमें जो आत्मविश्वास पैदा हुआ उसने एक महिला नेत्री को जन्म दिया। वह इससे आगे के चुनाव लड़ने की खाहिश होने के बावजूद भी पिछड़ गई, मैं आज जब पूरे हलाल का विश्लेषण करता हूँ तो मुझे लगता है कि यदि उसे पुरुष नेताओं के साथ संघर्ष नहीं करना होता तो शायद वह आज कम से कम जिला स्तर पर तो काम कर रही होती।

यह एक महिला के नेता बनने और फिर गुमनाम होने की कहानी नहीं है बल्कि प्रतिभा, संकल्प और उर्जा से भरी लाखों महिलाओं की बात है। पिछले तीस-पैंतीस सालों में जब से महिला सशक्तिकरण के लिये लोकसभा-विधानसभा में महिला आरक्षण की माँग उठी है तब लेकर अब तक सार्वजनिक क्षेत्र की कई संस्थायें जैसे स्थानीय निकायों, पंचायती राज संस्थाओं, सहकारिता, कारपोरेट, कानूनी संस्थाएं और अन्य संगठनों में महिलाओं को जो आरक्षण मिला, उसने देश की राजनीति में महिलाओं की भागीदारी को एक नई दिशा दी है।

महिला आरक्षण के कारण लाखों महिलाओं ने विभिन्न पदों पर काम करके प्रशासनिक व चुनावी अनुभव प्राप्त कर लिया है। आज देश का कोई ऐसा सार्वजनिक मंच नहीं है जहाँ महिलाएँ नेतृत्व नहीं कर रही हो।

जिस चुनाव का मैंने जिक्र किया है उसे बीते लगभग पैंतीस वर्ष बीत चुके हैं मगर आज जब पीछे मुड़कर देखाता हूँ विश्वास से भर जाता हूँ कि हमारी आबादी का पचास प्रतिशत अब कानून बनाने के लिये पूरी तौर से तैयार है, इसलिए इस प्रक्रिया को आगे बढ़ाने के लिये अन्तिम कदम उठाने में देरी करना ठीक नहीं है क्योंकि आज देश की महिलाएँ न केवल जागरूक हैं, बल्कि राजनीतिक रूप से परिपक्व भी हो चुकी हैं। ऐसे में यह स्वाभाविक है कि उन्हें देश के सर्वोच्च नीति-निर्माण मंचों पर कानून बनाने का भी समान अवसर मिलना चाहिए।

सालों की लंबी बहस के बाद आखिरकार वह ऐतिहासिक क्षण सितंबर 2023 में आया जब हमारी संसद ने लम्बी सार्थक बहस के बाद 106वें संविधान संशोधन को मंजूरी देते हुए महिला आरक्षण विधेयक पारित किया। इस कानून के तहत अब लोकसभा और राज्य विधानसभाओं में 33 प्रतिशत आरक्षण सुनिश्चित किया गया है।

हम सब जानते हैं कि आज तक देश में बने कानूनों में पुरुषों की भागीदारी अधिक रही है फलस्वरूप कानूनों में पुरुष सोच का वर्चस्व रहा है जो कि स्वाभाविक है। यही कारण रहा कि महिलाओं से जुड़े कई महत्वपूर्ण कानून समय पर नहीं बन सके। इसके चलते हमारे लोकतंत्र में अनेक ऐसी योग्य महिलाओं अवसरों से वंचित रह गईं, जो उत्कृष्ट नेतृत्व दे सकती थीं।

अब यह कानून उस ऐतिहासिक कमी को दूर करने की दिशा में एक निर्णायक कदम है। इसके माध्यम से महिलाओं को यह संवैधानिक अधिकार

मिलेगा कि वे उन सीटों से चुनाव लड़ सकें, जो उनके लिए आरक्षित होंगी। इससे न केवल महिलाओं की भागीदारी बढ़ेगी, बल्कि देश के लोकतंत्र में एक नई ऊर्जा और संतुलन स्थापित होगा।

देश में एनडीए सरकार के प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी लगातार इस बात पर बल देते रहे हैं कि महिलाओं को आरक्षण बहुत पहले मिल जाना चाहिए था मगर उनका स्पष्ट मानना है कि इसमें और देरी स्वीकार नहीं है। उन्होंने नारी शक्ति को लोकतंत्र में पूर्ण अवसर देने का संकल्प लेते हुए हर हाल में इस विधेयक को लागू करने की प्रतिबद्धता समय समय पर व्यक्त की है।

यही कारण है कि अब यह विश्वास मजबूत होता जा रहा है कि वर्ष 2029 के लोकसभा चुनावों में हम 33 प्रतिशत आरक्षण के कारण बड़ी संख्या में महिलाओं को संसद में देख सकेंगे।

यह सत्य है कि यह संशोधन जनगणना और परिशीलन की प्रक्रिया से जुड़ा हुआ है, लेकिन जिस दृढ़ता और प्रतिबद्धता के साथ इस दिशा में प्रयास हो रहे हैं, उससे यह स्पष्ट है कि अब वह तब तक नहीं जब भारत की महिलाएँ संसद में बैठकर देश के कानून निर्माण में निर्णायक भूमिका निभाएँगी।

यह केवल एक राजनीतिक परिवर्तन नहीं होगा, बल्कि यह भारत के लोकतंत्र में समानता, प्रतिनिधित्व और सामाजिक न्याय के एक नए युग की शुरुआत होगी। इस में राजनीति देखने वाले लोगों को खुद से यह प्रश्न करना चाहिए कि ऐसा करके वह लोकतंत्र को मजबूत करने की ओर अग्रसर देश की गति को धीमा क्यों करना चाहते हैं ?

वेब सीरीज समीक्षा
आदित्य दुबे
लेखक वेबसाइट ई- अंतर्भव के प्रबन्ध संचालक हैं।



वेब सीरीज - कसान, एक क्राइम थ्रिलर है जो अपनी तेज रफ्तार और उत्तार-चढ़ाव भरी कहानी के कारण आपको बाँधे रखती है। इसमें कुछ कमियां जरूर हैं लेकिन इसके बावजूद इस सिरीज को देखना रोमांचक अनुभव साबित होगा। यह सिरीज अपराध, पावर पॉलिटिक्स और पुलिस-गैंगस्टर टकराव की एक पुख्ता और सघन कहानी पेश करती है। सिरीज में हाई-ऑक्टेशन एक्शन सीक्वेंस हैं, जो दर्शकों को बाँधे रखते हैं। जैतन वागले द्वारा निर्देशित, यह सिरीज बहुत तेज रफ्तार है, हालांकि कुछ जगहों पर यह अटकती-सी लगती है। इस सिरीज में पावर, पॉलिटिक्स और पुलिस महकमे की अंदरूनी चीजों को दिखाने की कोशिश भी की गई है। पुलिस और अपराधियों के बीच टकराव और गैंगवार को भी दिखाया गया है।इस सिरीज में पावर, पॉलिटिक्स और पुलिस महकमे की अंदरूनी चीजों को दिखाने की कोशिश भी की गई है। पुलिस और अपराधियों के बीच टकराव और गैंगवार को भी दिखाया गया है।

कहानी का जहाँ तक सवाल है यह एक ईमानदार पुलिसवाले की अपराध से भरे शहर में तैनाती और अपराधियों से उनके जूझने की कहानी है। सिरीज में ईमानदार पुलिस अधिकारी की भूमिका साकिब स7लीम ने निभाई है। वो अवैध शराब के व्यापार और जमीन हड़पने में शामिल दो प्रतिद्वंद्वी गिरोहों से भिड़ता है। जैसे-जैसे वह मामले की तह तक जाता है, छिपे हुए मकसद उसके मिशन को और भी जटिल बना देते हैं।अपराध में डूबे शहर ज्वालाबाद

कसान- ईमानदार पुलिस अधिकारी की संघर्ष कथा

कहानी का जहाँ तक सवाल है यह एक ईमानदार पुलिसवाले की अपराध से भरे शहर में तैनाती और अपराधियों से उनके जूझने की कहानी है। सिरीज में ईमानदार पुलिस अधिकारी की भूमिका साकिब सलीम ने निभाई है। वो अवैध शराब के व्यापार और जमीन हड़पने में शामिल दो प्रतिद्वंद्वी गिरोहों से भिड़ता है। जैसे-जैसे वह मामले की तह तक जाता है, छिपे हुए मकसद उसके मिशन को और भी जटिल बना देते हैं।अपराध में डूबे शहर ज्वालाबाद में यह ईमानदार पुलिसवाला अवैध शराब व्यापार और जमीन हड़पने में शामिल माफिया समूहों से तो लड़ता ही है, साथ ही सत्ता संघर्ष और व्यक्तिगत संघर्ष जैसे विषयों से भी निपटता है। सिरीज का परिवेश बिल्कुल सही है, और ज्यादातर कलाकार अपनी भूमिकाओं में बखूबी ढले हैं। दो गिरोहों की दुश्मनी और उनके अपराध के जटिल जाल को एक ऐसी कहानी में बड़ी खूबसूरती से बुना गया है जो एक सख्त पुलिसवाले की कार्रवाइयों पर केंद्रित रहती है।

में यह ईमानदार पुलिसवाला अवैध शराब व्यापार और जमीन हड़पने में शामिल माफिया समूहों से तो लड़ता ही है, साथ ही सत्ता संघर्ष और व्यक्तिगत संघर्ष जैसे विषयों से भी निपटता है। सिरीज का परिवेश बिल्कुल सही है, और ज्यादातर कलाकार अपनी भूमिकाओं में बखूबी ढले हैं। दो गिरोहों की दुश्मनी और उनके अपराध के जटिल जाल को एक ऐसी कहानी में बड़ी खूबसूरती से बुना गया है जो एक सख्त पुलिसवाले की कार्रवाइयों पर केंद्रित रहती है। तेज़ रफ्तार, साथ ही नियमित मोड़, इसे एक बार देखने लायक तो बनाते ही हैं।

एसएसपी समरदीप सिंह के रूप में साकिब सलीम ने शानदार अभिनय किया है और एक सख्त पुलिस अधिकारी की भूमिका में वे सहजता से ढल



गए हैं। अपने करीबी लोगों को खोने के कारण इस चरित्र में भावनात्मक गहराई भी है, जिसे शो धीरे-धीरे उजागर किया गया है। गैंगस्टर मुन्ना के रूप में अंजुम शर्मा ने दमदार और विश्वसनीय प्रदर्शन किया

है। कबीर के रूप में सिद्धार्थ निगम का अभिनय भी प्रभावी है, हालांकि कभी-कभी वे थोड़ा अतिरंजित लगते हैं। एक और गैंगस्टर शाहीन के रूप में आरिफ जकारिया और स्थानीय नेता संगवान के रूप में वरुण बडोला ने सहायक भूमिकाएँ निभाई हैं और अपने चरित्रों में विश्वसनीय प्रतीत होते हैं। कुल मिलाकर सभी कलाकारों ने एक साथ अच्छे काम किया है और श्रृंखला के प्रभाव को बढ़ाया है।शसिरीज में लोकप्रिय सीरियल ‘एफआईआर’ में इंस्पेक्टर चंद्रमुखी चौटाला का रोल निभाकर तारीफ बटोरने वाली एक्ट्रेस कविता कौशिक भी अहम रोल में नजर आई हैं। इस सिरीज में भी कविता ने खाकी

वर्दी पहनी है। रह सिरीज गत 03 अप्रैल को ओटीटी प्लेटफॉर्म एमएक्स प्लेयर पर स्ट्रीम हुई है। कुछ कथानक बिन्दु प्रशंसक चिह्न लगाते हैं और कमजोर ढंग से सोचे-समझे लगते हैं। एक दृश्य में, एसएसपी समरदीप अपने गुप्त मुखबिर राघव को कबीर से मिलवाते हैं, जबकि मुखबिर की पहचान गुप्त रखी जानी थी। इसके तुरन्त बाद, कबीर उसकी हत्या कर देता है, और एक तेजतर्र और बुद्धिमान अधिकारी के रूप में दिखाए जाने के बावजूद, समरदीप यह पता लगाने में संघर्ष करते हैं कि इसके लिए कौन जिम्मेदार है। ऐसे क्षण अनुभव को कम कर देते हैं। फिर भी, ये कमियां शो को पूरी तरह से पटरी से नहीं उतारतीं।

दिलचस्प बात यह है कि मुख्य खलनायक की कहानी क्लाइमेक्स से काफी पहले ही खत्म हो जाती है, और आखिरी एपीसोड आगे की कहानी की रूपरेखा तैयार करने पर केंद्रित है। दमदार अभिनय के साथ यह एक तेज-तर्रार और मनोरंजक सीरीज है। यह पुलिस शैली में कोई नयापन नहीं लाती, लेकिन इसमें इतने नए तत्व जरूर हैं कि इसे देखना सार्थक हो जाता है।

श्रद्धांजलि : वृजभूषण मेहरु

अलविदा वाग्मिता के वृहद कोश

कभी-कभी कुछ व्यक्तित्व ऐसे होते हैं, जो सामने कम दिखाई देते हैं लेकिन अपने काम और प्रभाव से पूरी पीढ़ियों को आकार दे जाते हैं। वृजभूषण मेहरु ऐसे ही विलक्षण व्यक्तित्व थे। वे केवल एक उद्घोषक नहीं थे, बल्कि शब्दों के साधक, आवाज के कलाकार और भाषा के सच्चे संरक्षक थे। उनकी विदाई केवल एक व्यक्ति का जाना नहीं, बल्कि एक युग का समाप्त होना है।



रविराज प्रणामी

वृजभूषण मेहरु का नाम भले ही आम लोगों के बीच उतना चर्चित न रहा हो, लेकिन रेडियो, सिनेमा और संगीत की दुनिया में उनका योगदान अत्यंत गहरा और स्थायी है। उनकी पहचान एक ऐसे वाक्पटु कलाकार की थी, जिनकी आवाज में गंभीरता, स्पष्टता और गरिमा का अद्भुत संगम था। वे शब्दों को केवल बोलते नहीं थे, बल्कि उन्हें जीते थे और श्रोताओं तक उनकी आत्मा पहुंचा देते थे। उनकी विद्वता और भाषा पर पकड़ का अंदाजा इस बात से लगाया जा सकता है कि महान गायक मोहम्मद रफी जैसे दिग्गज भी उनके पास शब्दों के सही उच्चारण को समझने के लिए आया करते थे। यह एक असाधारण बात है कि जिसे दुनिया 'खुदा की आवाज' कहती थी, वह स्वयं किसी के पास जाकर शब्दों की बारीकियां सीखता था। रफी साहब की यही विनम्रता और वृजभूषण जी की यही विद्वता उन्हें विशेष बनाती है।



कहा जाता है कि जब भी रफी साहब को किसी गीत में कठिन उर्दू या हिंदी शब्दों का उच्चारण समझना होता, तो वे बिना किसी औपचारिकता के वृजभूषण जी के पास पहुंच जाते थे। वे फर्श पर बैठकर बड़े ध्यान से हर शब्द का सही उच्चारण और उसके भाव को समझते थे। वृजभूषण जी केवल शब्द नहीं सिखाते थे, बल्कि यह भी बताते थे कि उस शब्द को आवाज में कैसे उतारा जाए, ताकि उसका भाव पूरी तरह प्रकट हो सके। वाग्मिता, यानी प्रभावशाली और सुंदर ढंग से बोलने की कला, वृजभूषण मेहरु के व्यक्तित्व की सबसे बड़ी पहचान थी। उनकी इसी कला का सम्मान



करते हुए उन्हें 'वाग्मिता का वृहद कोश' कहा जाता था। उनकी आवाज में एक ऐसा ठहराव था, जो श्रोताओं को बांध लेता था और उनके शब्दों में ऐसी स्पष्टता थी, जो सीधे दिल तक पहुंचती थी।

उनकी प्रतिभा का एक और बड़ा प्रमाण यह है कि प्रसिद्ध उद्घोषक अमीन सायानी, जिन्हें रेडियो का बादशाह कहा जाता है, वे भी वृजभूषण जी को अपना प्रिय उद्घोषक मानते

हैं। उनका योगदान केवल फिल्मों तक ही नहीं, बल्कि रेडियो और सिनेमा के क्षेत्रों में फैला हुआ है। उन्होंने अपनी कला, अपने ज्ञान और अपनी आवाज के माध्यम से एक ऐसी विरासत बनाई, जो आने वाली पीढ़ियों को प्रेरित करती रहेगी।

अप्रैल 1935 में जन्मे वृजभूषण मेहरु ने अप्रैल में ही इस दुनिया को अलविदा कहा। यह संयोग ही है कि जिस महीने में उन्होंने जीवन की शुरुआत की, उसी महीने में उन्होंने अपनी अंतिम यात्रा भी पूरी की। उनके जाने से एक ऐसा खालीपन पैदा हुआ है, जिसे भर पाना आसान नहीं होगा। अंततः यही कहा जा सकता है कि वृजभूषण मेहरु केवल एक व्यक्ति नहीं थे, बल्कि एक संस्था थे। उनकी आवाज, उनकी वाग्मिता और उनका ज्ञान हमेशा हमारे बीच जीवित रहेंगे। वे भले ही इस दुनिया से विदा हो गए हों, लेकिन उनकी गूंज हमेशा हमारे दिलों और यादों में बनी रहेगी। एक महान आत्मा को विनम्र श्रद्धांजलि।



अशोक जोशी

जब से नितिश तिवारी की चार हजार करोड़ की लागत वाली फिल्म 'रामायण' का टीजर आया, विवादों का एक अंतहीन सिलसिला आरंभ हो गया। किसी को फिल्म के नायक रणवीर कपूर को लेकर परेशानी



है, तो कोई महज इसलिए परेशान हो रहा है कि फिल्म में वीएफएक्स और एआई का प्रयोग किया गया है। कुछ लोग को इसकी तुलना 1987 में दूरदर्शन पर प्रसारित रामानंद सागर के लोकप्रिय धारावाहिक 'रामायण' से तुलना करने लगे हैं। ऐसे में ज्यादातर लोगों ने फिल्म के बदलते मिजाज और प्रयुक्त होने वाली आधुनिक तकनीकों को नजर अंदाज ही किया है।

हैं। 'रामायण' में राम की भूमिका में रणवीर कपूर के लुक को देखकर सबसे पहले रामानंद सागर के धारावाहिक 'रामायण' के लक्ष्मण सुनील लहरी ने अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त करते हुए कहा है कि फिल्म 'एनिमल' की क्रूर भूमिका के बाद रणवीर को स्नेहिल और सदा मुस्कुराते हुए राम की भूमिका करते देखकर अजीब सा लगता है। उनका यह भी मानना है, कि यदि उनके इस आक्रामक रूप को देखा जाए तो वह लक्ष्मण की भूमिका में ज्यादा फवते। सुनील लहरी का यह भी मानना है, कि राम की भूमिका को तो अरुण गोविल अमर कर गए। इसलिए इस रोल में उनके सिवा कोई और नहीं जंचता। कुछ लोगों को रणवीर कपूर को राम की भूमिका करने से इसलिए भी एतराज है कि बरसों पहले उन्होंने यह बयान दिया था कि वह बीफ खाने के शौकीन हैं।

आज जिस रणवीर कपूर को राम बनाने पर लोगों को एतराज है, कभी खुद रणवीर को इस भूमिका को करने पर एतराज था। शुरुआत में उन्होंने इस रोल को करने से मना कर दिया था। क्योंकि, वह इतनी बड़ी जिम्मेदारी से डर गए थे और खुद को इस भूमिका के लिए योग्य नहीं मानते थे। मग बजट फिल्म 'रामायण' इस साल दीवाली के मौके पर रिलीज होने वाली है। दो पार्ट में बन रही ये फिल्म 'रामायण' की कहानी को ग्रैंड स्केल पर बड़े पैरों पर आने वाली है। फिल्म में कमाल की स्टार कास्ट है, जिसमें हिंदी सिनेमा और साउथ सिनेमा के बड़े नाम शामिल हैं। फिल्म का पहला टीजर रिलीज होने के बाद से इस फिल्म के बारे में और जानकारी सामने आ रही है। हाल ही में रणवीर कपूर ने बताया कि जब उन्हें भगवान राम का किरदार ऑफर हुआ था, तो उन्होंने शुरुआत में इसे निभाने से साफ इनकार कर दिया था।

उन्होंने यह भी बताया कि जब उनसे भगवान राम का किरदार निभाने को लेकर पूछा गया, तो



वो जिम्मेदारी से डर गए थे और उन्हें लगा कि वो इस भूमिका के लिए योग्य नहीं हैं। लेकिन, इस घटना के कुछ वक्त के बाद नमित मल्होत्रा ने फिल्म को लेकर उन्हें अपना विजन बताया और जब उनकी मुलाकात फिल्म के डायरेक्टर नितेश तिवारी से हुई। उस वक्त नितेश ने उन्हें फिल्म की कहानी बताई, जिसके बाद उन्होंने रोल के लिए हामी भर दी। बावजूद इसके उन्हें कई दिनों तक तो यह यकीन ही नहीं हुआ कि वह भगवान राम का किरदार निभा रहे हैं। लेकिन, आज वह इसे अपने जीवन और करियर का सबसे बड़ा टर्निंग पॉइंट मानते हैं।

रणवीर द्वारा राम की भूमिका स्वीकार करने का एक और कारण भी है। उनका मानना है, कि फिल्म के ऑफर और पहली बार पिता बनने की खबर के बीच कुछ ऐसा हुआ कि उनकी जिंदगी ही बदल गई। उनका मानना है कि उस दौरान वे जिंदगी के ऐसे दौर से गुजर रहे थे, जहां उन्हें अपनी जिंदगी और जीवन शैली में बदलाव लाने की जरूरत थी। वह पहली बार पिता बने थे। तब उन्हें लगा कि भगवान राम का रोल

रियल बॉक्स

फिल्मों के डराने वाले मनहूस टाइटल

हेमंत पाल

लेखक 'सुबह सवेरे' इंटीर के स्थानीय संपादक हैं।



सलमान खान ने हाल ही में अपनी फिल्म 'गलवान' का नाम बदलकर 'मातृभूमि' रख दिया। इसके पीछे कारण चाहे जो भी बताए जा रहे हों, लेकिन इस बात से भी इंकार नहीं किया जा रहा कि पुराने नाम को बदलने के पीछे कोई शुभ-अशुभ का गणित भी हो सकता है। क्योंकि, ऐसे प्रयोगों का एक लंबा इतिहास रहा है। कुछ फिल्मों सिर्फ नाम की वजह से ही नहीं चलीं। कई बार तो फिल्मों के नाम की स्पेलिंग बदलकर इस प्रयोग को सुधारा गया, जो सफल रहा। बॉलीवुड की चमक-दमक भरी दुनिया में जहां करोड़ों की कमाई का सपना हर कलाकार देखता है, वहीं अंधविश्वास की जड़ें इतनी गहरी होती हैं कि टाइटल की एक स्पेलिंग बदलने से फिल्म की किस्मत पलट सकती है। सफलता का मंत्र सिर्फ टैलेंट, स्क्रिप्ट या स्टार पावर नहीं, बल्कि सही टाइमिंग और भाषा भी है। इंडस्ट्री के पुराने दिग्गजों से लेकर नए सितारों तक, हर कोई टोटकों का सहारा लेता है मंगल दोष दूर करने के लिए पूजा, शुभ मुहूर्त में शूटिंग शुरू करना या फिर नाम बदलकर रिलीज। लेकिन, कुछ टाइटल ऐसे हैं जो जड़ से मनहूस साबित हुए हैं। इनका जिक्र होते ही प्रोड्यूसर्स के चेहरे पीले पड़ जाते हैं। सबसे कुख्यात है 'शहजादा'। पिछले 50 सालों में राजेश खन्ना, अजय देवगन और कार्तिक आर्यन जैसे सितारों ने इस नाम के साथ दांव लगाया, लेकिन हर बार बॉक्स ऑफिस पर पानी फेर गया।

बॉलीवुड में 'शहजादा' नाम की काली छाया इतनी घनी है कि इसका जिक्र भर से स्टार्स सिहर उठते हैं। पहली बार यह अभिशाप 1972 में राजेश खन्ना पर उतरा। सुपरस्टार खान साहब की लहर पर सवार होकर 'शहजादा' रिलीज हुई। डायरेक्टर कोटि कोमीनिनी की यह फिल्म मूल रूप से इंटरलियन हिट 'पुडुजा गोगो' का रीमेक थी। राजेश खन्ना के अलावा मोना सिंह और प्रिया राजवंश मुख्य भूमिकाओं में थे। उम्मीदें आसमान छू रही थीं, लेकिन फिल्म ने महज 50 लाख की कमाई की। ट्रेड एनालिस्टों के मुताबिक, बजट के मुकाबले 70 प्रतिशत का घाटा हुआ। दर्शक फिल्म को पुरानी और बेस्वाद मान बैठे। राजेश खन्ना का जलवा उस दौर में था, फिर भी 'शहजादा' ने उनकी लकीर तोड़ दी। इंडस्ट्री में चर्चा फैली कि नाम में ही कुछ खराब है। चार दशक बाद 2012 में अजय देवगन ने इस मनहूस टाइटल को फिर आजमाया। 'सन ऑफ सरदार' के बाद मनोज मुंताशिर की स्क्रिप्ट पर बनी यह फिल्म एक्शन-ड्रामा थी। संजय लीला भंसाली प्रोडक्शन की चमक के साथ अजय देवगन, संजय दत्त और काजोल जैसे सितारे थे। लेकिन रिलीज होते ही धमाका उल्टा फूटा। पहले हफ्ते में 25 करोड़ जुटाए, लेकिन कुल 45 करोड़ पर सिमट गई। बजट 80 करोड़ से ऊपर था, यानी प्रोड्यूसर्स को 50 करोड़ का खून लगा। क्लिंटक्स ने स्क्रिप्ट को कमजोर बताया, लेकिन ट्रेड गुरु कमल जैन जैसे जानकारों का मानना है कि 'शहजादा' नाम ने ही आम में धी डाला। अजय देवगन ने बाद में स्वीकार किया कि फिल्म की असफलता ने उन्हें सोचने पर मजबूर कर दिया।

सबसे ताजा झटका 2023 में कार्तिक आर्यन को लगा। रोहित धवन डायरेक्टोरियल

'शहजादा' तेलुगु हिट 'अला वाइकुंटपुरमलू' का रीमेक थी। कार्तिक आर्यन, कृति सैनन और तद्दुइह के साथ पूजा हेगड़े थीं। प्रचार भव्य था, ट्रेलर वायरल हुआ, लेकिन बॉक्स ऑफिस पर जोरो। पहले दिन 6 करोड़, कुल 30 करोड़ की कमाई। 75 करोड़ बजट वाली फिल्म ने 60 प्रतिशत घाटा दिया। कार्तिक की 'फ्रेडी' जैसी पिछली हिट्स के बावजूद दर्शक मुंह फेर लिया। सोशल मीडिया पर मोम्स की बाढ़ आ गई। निर्देशक रोहित धवन ने कहा, 'कभी-कभी चीजें नियंत्रण से बाहर हो जाती हैं।' लेकिन इंडस्ट्री वाले फुसफुसाते हैं शहजादा का अभिशाप फिर चला। तीन दशकों में तीन फ्लॉप, तीन स्टार्स की बर्बादी। क्या यह संयोग है या नाम का जादू?

'शहजादा' अकेला नहीं। बॉलीवुड में कई ऐसे टाइटल हैं जो फ्लॉप की गारंटी बन चुके हैं। 'आग' इसका सबसे काला उदाहरण है। 1980 के दशक में कमल हासन वाली फ्लॉप, 1999 में गोविंदा की असफल, 2003 में संजय दत्त वाली भी जलकर राख। तीनों ने प्रोड्यूसर को बर्बाद किया। 'बदला' का सिलसिला तो 1966 से चला। मीना कुमारी वाली फेल, 1970 में धर्मेन्द्र की फिल्म डूबी, हालांकि 2019 वाली हिट रही, लेकिन पुरानी ने नाम खराब कर दिया। 2025 में सलमान खान की 'सिकंदर' सबसे बड़ी फ्लॉप बनी,



करोड़ का बजट खा लिया। 2003 में संजय दत्त की 'लूगी' टाइप 'आग' आई, फिर फुसस। तीनों 'आग' बॉक्स ऑफिस पर जल गईं। प्रोड्यूसर आज भी इससे दूर भागते हैं एक और नाम है 'बदला'। 1966 में मीना कुमारी की 'बदला' फ्लॉप हुई। 1970 में धर्मेन्द्र वाली भी डूबी। 2019 में तापसी पन्नू और अमिताभ बच्चन की 'बदला' ने तो कमाल किया, लेकिन इससे पहले के दो 'बदला' ने इंडस्ट्री को सबक सिखाया। ट्रेड एक्सपर्ट सुमीत कचड़ कहते हैं कि बार-बार फेल होने वाले नामों से बचना चाहिए। 'खिलाड़ी' भी मनहूस साबित हुआ। अक्षय कुमार की 1996 वाली 'खिलाड़ी' हिट रही, लेकिन 2016 में 'खिलाड़ी 786' ने 125 करोड़ बजट पर 50 करोड़ कमाए। फिर 2022 में सिद्धू की 'खिलाड़ी' सीरीज का नया भाग फुसस। नाम की चमक फीकी पड़ गई। इसी तरह 'हमसे ही सीखो' या 'मिस्टर इंडिया के बाद' जैसे टाइटल भी दुर्भाग्य लाए। लेकिन सबसे ज्यादा चर्चित 'नो एंट्री' का सीक्वल। 2005 की अनीस बज्मी वाली हिट थी, लेकिन 2024 तक लटकी 'नो एंट्री 2' रह गई है। प्रोड्यूसर बोले, नाम में ही दिक्कत है। इसके अलावा 'काला' भी काला पड़ा। 2012 में विवेक अंबेरियर वाली फ्लॉप, 2023 में सलमान खान की साउथ की रीमेक भी औसत रही। आशय यह कि नाम बताया, लेकिन ट्रेड गुरु कमल जैन जैसे जानकारों का मानना है कि 'शहजादा' नाम ने ही आम में धी डाला। अजय देवगन ने बाद में स्वीकार किया कि फिल्म की असफलता ने उन्हें सोचने पर मजबूर कर दिया।

1980 में सुभाष घई की 'कज' में ऋषि कपूर लीड रोल में थे, लेकिन यह बुरी तरह

जिसकी लागत तक नहीं निकली। शूटिंग में स्क्रिप्ट बदली, लेकिन नाम भी मनहूस साबित हुआ। ये उदाहरण बताते हैं कि 'शहजादा' अकेला नाम नहीं है। 'कज' जैसे नाम भी पूरी इंडस्ट्री का दुश्मन बने। ये टाइटल साबित करते हैं कि बॉलीवुड में नाम बदलना क्यों जरूरी माना जाता है।

बॉलीवुड में नाम बदलना आम है। जब मनहूस टाइटल का डर सताता है, तो स्पेलिंग जादू चल जाता है। सबसे मशहूर केस है 'शोले'। मूल नाम कुछ और था, जिस पर मनोज कुमार ने आपत्ति जताई थी। फिर 'द बॉम्बे समर 1971' सोचा गया, लेकिन अंत में 'शोले' किया गया। 1975 में 35 करोड़ कमाई, सुपरहिट। अगर पुराना नाम रहता, तो शायद यह नहीं होता! सलमान खान की 'राधे' भी मूल रूप से 'राधिका' थी। अंधविश्वास से 'राधे' योर मोस्ट वांटेड भाई' हो गया। पाइरेटेड रिलीज के बावजूद फील हिट रही। आभिर खान की 'लगाना' का नाम पहले 'सकारी राज' था। ज्योतिषी बोले, यह नाम नेगेटिव है। फिर जो नाम बदला उसके बाद तो ऑस्कर नॉमिनेशन मिला। '3 इडियट्स' का नाम भी पहले '5 इडियट्स' था, जिसे बदला गया तो फिल्म ने इतिहास बना दिया। राजकुमार हिरानी ने कहा था 'नाम में ही ताकत है।' शाहखान खान की 'ओम शांति ओम' पहले 'ओम शांति शांति' था। शांति दो बार से डर लगा, तो नाम बदला गया फिल्म 2007 में ब्लॉकबस्टर हुई। अब तो प्रोड्यूसर नाम की पहले ही टेस्टिंग कराने लगे। बॉलीवुड की यह परंपरा साबित करती है कभी नाम से मत डरो, जरा भी शंका हो, तो बदल दो!

- hemantpal60@gmail.com / 9755499919

फिर विवाद में आए है सिनेमा के राम



वो जिम्मेदारी से डर गए थे और उन्हें लगा कि वो इस भूमिका के लिए योग्य नहीं हैं। लेकिन, इस घटना के कुछ वक्त के बाद नमित मल्होत्रा ने फिल्म को लेकर उन्हें अपना विजन बताया और जब उनकी मुलाकात फिल्म के डायरेक्टर नितेश तिवारी से हुई। उस वक्त नितेश ने उन्हें फिल्म की कहानी बताई, जिसके बाद उन्होंने रोल के लिए हामी भर दी। बावजूद इसके उन्हें कई दिनों तक तो यह यकीन ही नहीं हुआ कि वह भगवान राम का किरदार निभा रहे हैं। लेकिन, आज वह इसे अपने जीवन और करियर का सबसे बड़ा टर्निंग पॉइंट मानते हैं।

रणवीर द्वारा राम की भूमिका स्वीकार करने का एक और कारण भी है। उनका मानना है, कि फिल्म के ऑफर और पहली बार पिता बनने की खबर के बीच कुछ ऐसा हुआ कि उनकी जिंदगी ही बदल गई। उनका मानना है कि उस दौरान वे जिंदगी के ऐसे दौर से गुजर रहे थे, जहां उन्हें अपनी जिंदगी और जीवन शैली में बदलाव लाने की जरूरत थी। वह पहली बार पिता बने थे। तब उन्हें लगा कि भगवान राम का रोल



निभाने और पिता बनने का यह प्यारा संयोग उनकी जिंदगी में एक अहम मोड़ लाने के लिए



जरूरी था। पिता बनने के साथ साथ राम की भूमिका निभाने के बाद वास्तव में उनकी जिंदगी में काफी बदलाव आया है। उन्होंने खुद को उस किरदार में पूरी तरह डाल लिया। यहाँ तक कि फिल्म निर्माण के दौरान उन्होंने मांसाहार और मदिरापान तक छोड़ दिया। इसके पीछे वह अपने किरदार को पूरी तरह से जीवित करने के लिए थे। क्योंकि राजकपूर भी फिल्म निर्माण के दौरान पूरी तरह से शाकाहारी बन जाते थे।

ऐसा नहीं कि राम की भूमिका के लिए रणवीर को चोतरफा आलोचना ही हो रही है। विवादों के बीच सद्गुरु ने रामायण के कलाकारों के बारे में मद्रिपान तक छोड़ दिया। इसके पीछे वह अपने किरदार को पूरी तरह से जीवित करने के लिए थे। क्योंकि राजकपूर भी फिल्म निर्माण के दौरान पूरी तरह से शाकाहारी बन जाते थे।

किरदार निभा सकता है। उन्होंने रावण के रूप में यश की कास्टिंग के बारे में कहा कि यश एक सुंदर इंसान होने के साथ साथ एक बहुत ही प्रतिभाशाली सुपरस्टार हैं।

जहाँ तक फिल्म की तकनीक का प्रश्न है फिल्म के शुरुआती सीन में भगवान राम को काफी दिव्य रूप में दिखावे के लिए वीएफएक्स का इस्तेमाल किया गया है। टैक्निकली, फिल्म में मोशन कैप्चर टेक्नोलॉजी का इस्तेमाल किया गया है, जिसका मकसद किरदारों के एक्सप्रेशन को जिंदा करना है। जिसके बारे में कुछ लोग इसे बनावटी मान रहे हैं। इस पर निर्माता का कहना है कि हम सब देख रहे हैं और आवश्यक हुआ तो प्रदर्शन से पहले वीएफएक्स के दृश्यों में जरूरी सुधार कर इसे वास्तविक बनाने का प्रयास किया जाएगा।

'अवतार' जैसी फिल्मों में वीएफएक्स और एआई तकनीक का अच्छे उपयोग किया गया है जिसे दर्शकों ने स्वीकार भी किया है। उम्मीद है कि चार हजार करोड़ रुपए खर्च करने वाले निर्माता इस बात को स्वीकार कर अपनी फिल्म को भव्य बनाने के लिए हर प्रयास जरूर करेंगे। जिसका निर्णय फिल्म के प्रदर्शन के बाद ही हो पाएगा। यह तो तय है कि 'आदि पुरुष' में वीएफएक्स के फूहड़ उपयोग और उसकी असफलता से 'दंगल' जैसी सफल फिल्म के निर्देशक नितेश तिवारी निश्चय ही कुछ सबक लेकर 'रामायण' को उसकी भव्यता और पौराणिकता के अनुरूप बनाकर पेश करने का प्रयास करेंगे। 'रामायण' का पहला पार्ट 2026 में दिवाली के मौके पर और दूसरा पार्ट 2027 में दिवाली के मौके पर रिलीज हो सकता है। इसमें रणवीर कपूर भगवान राम के रोल में, यश रावण के रोल में, साई पल्लवी सीता के रोल में, सनी देओल भगवान हनुमान के रोल में और रवि दुबे लक्ष्मण के रोल में नजर आएंगे।

